अखण्ड ज्योति

(देश देशांतरों में प्रचारित, उच्च कोटि का आध्यात्मिक मासिक-पत्र)

मू० २॥)

सन्देश नहीं मैं स्वर्ग लोक का लाई ।
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आई ॥

एक अंक ।)

ादक—पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, सहा० सम्पा०—प्रो० रामचरण महेन्द्र एम ०ए०

८ मथुरा, १ मार्च सन् १९४७ ई० अंक ३

[illegible] शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

अपनी योग्यताओं का प्रमाण दीजिए ।

इस संसार रूपी समुद्र में असंख्य प्रकार के अत्यन्त मूल्यवान महत्व पूर्ण रत्न इंच-इंच भूमि में प्रचुर परिमाण में भरे पड़े हैं। यह रत्न राशि परमात्मा ने इस लिए बिछा रखी है कि उनका राजकुमार-मनुष्य-उसके द्वारा अपनी श्री वृद्धि करे। परन्तु यह है कि जो उन्हें प्राप्त करने की योग्यता सिद्ध करे उसे ही वे दिये जावें। जैसे छोटे बालक को, या बुद्धि हीनों को बन्दूक नहीं सोंपी जा सकती, वैसे ही अयोग्य व्यक्तियों को यह रत्न राशि उपलब्ध नहीं होती। नाबालिगों को राज्य दरबार में अप्रामाणिक माना जाता है, उन्हें वे अधिकार नहीं मिलते जो एक साधारण नागरिक को मिलने चाहिए किन्तु जैसे ही वह नाबालिग अपनी वयस्कता का प्रमाण प्रस्तुत कर देता है वैसे ही उसे राज्य दरबार में प्रामाणिकता प्राप्त हो जाती है। मनुष्य की नाबालिगी उसकी लापरवाही और आलस्य है। जब तक सावधानी जागरूकता और परिश्रम शीलता जागृत नहीं होती तब तक वह नाबालिगी दूर नहीं होती और न तब तक संसार की बहुमूल्य संपदायें मिल सकती हैं। किन्तु जब अपनी उद्योग शीलता, परिश्रम, प्रियता जागरूकता, प्रमाणित करदी जाती है तो परमात्मा द्वारा इस सृष्टि में पग पग पर बिछाये हुए रत्नों की राशि हमें आसानी से प्राप्त होने लगती है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पूर्ण शान्ति की प्राप्ति

(ले०—श्री राल्फ वाल्डो ट्राईन)

जिस क्षण हम भगवान् के साथ अपनी एकता, सगर सत्ता का अनुभव करना प्रारम्भ कर देते हैं, उसी क्षण हमारे हृदय में शान्ति का स्रोत बहने लगता है। अपने को सदा सुन्दर, स्वस्थ पवित्र आध्यात्मिक विचारों से ओतप्रोत रखना, वस्तुतः जीवन और शान्ति की प्राप्ति है। इस सत्य को सदा अपने हृदय-पटपर अंकित करना कि "मैं आत्मा हूँ, भगवान् का अंश हूं" और हमेशा ही इसी विचार धारा में उठते रहना शान्ति का मूलतत्व है। कितना करुणा जनक और आश्चर्य प्रद दृश्य है कि संसार हमें हजारों व्यक्ति चिन्तित, दुःखी, शान्ति की प्राप्ति के लिए इधर उधर भटकते हुए तथा विदेशों की खाक छानते हुए नजर आते हैं, परन्तु उन्हें शान्ति के दर्शन नहीं होते। इसमें तिलमात्र भी सन्देह नहीं कि इस प्रकार वे कदापि शान्ति नहीं प्राप्त कर सकते, चाहे वर्षों तक वे स[illegible] प्रयत्न करते रहें, क्योंकि वे शान्ति को वहां खोज रहे हैं, जहां कि इसका सर्वथा अभाव है। वे भोले मनुष्य बाह्य पदार्थों की ओर तृष्णा भरी निगाहों से देख रहे हैं जब कि शान्ति का चश्मा उनके अपने अन्दर बह रहा है। कस्तूरी मृग की नाभि में विद्यमान है, परन्तु मृग अज्ञानतावश उसे खोजता फिरता है। जीवन में सच्ची शान्ति अपने अन्दर झांकने से ही मिल सकती है।

वाह्य संसार में शान्ति नहीं, शान्ति का उद्गम स्थान तो मनुष्य की आत्मा है। आप शान्ति की खोजमें चाहे भले ही जंगलों में भटकते फिरें, शारीरिक वासनाओं, इच्छाओं और आवेशों की पूर्ति को ही शान्ति समझते रहें, तथा वाह्य पदार्थों की प्राप्ति द्वारा शान्ति का दिव्य आनन्द उपभोग करना चाहें, पर सच जानिए, सच्ची शान्ति के दर्शन आपको नहीं होंगे। परन्तु इस कथन से मेरा यह तात्पर्य कभी नहीं कि आदमी को अपनी इच्छाओं, शारीरिक आवेशों और लालसाओं की पूर्ति करनी ही नहीं चाहिए, अपितु इन शारीरिक इच्छाओं और आवेशों की पूर्ति उस सीमातक मनुष्य को करनी चाहिए, जहांतक यह हमारे स्वास्थ्य को कायम रखने में आवश्यक है। दिन रात इन्हीं आवेशों की पूर्ति में लगा रहने वाला व्यक्ति असन्तोष, चिन्ता और उदासी की काली छाया से घिरा रहता है। सुन्दर, स्वस्थ जीवन बिताने के लिए शारीरिक आवेशों की पूर्ति नितान्त आवश्यक है, परन्तु सबसे बड़ी आवश्यकता है अपने मन पर नियन्त्रण की, मन का इन्द्रियों का दास नहीं, अपितु उनका स्वामी बनना चाहिए।

शान्ति की प्राप्ति में बच्चों की सी स्वाभाविक सरलता और हृदय की निष्कपटता नितान्त आवश्यक है। सन्त-महात्माओं की समुन्नति का प्रधान कारण यही सरल-हृदयता है, उनका मानसरोवर सदा स्फटककी नाई शुद्ध रहता है और उनमें प्रेम, पवित्रता और प्रकाश के पुष्प प्रफुल्लित रहते हैं। जिस प्रकार एक बच्चा पूर्ण रूपेण अपने को पिता के प्रति समर्पित कर देता है, अपने हृदय की कोई भी बात उससे गुप्त नहीं रखता, ठीक इसी प्रकार सन्त जन अपना भगवान् के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण कर देते हैं।

जो भगवान् के साथ अपनी एकता अनुभव करना प्रारम्भ कर देते हैं, वे सर्वथा निर्भय हो जाते हैं और उन्हें सदा ऐसा प्रतीत होता है कि मंगलमय भगवान् स्वयं उनकी रक्षा के लिए कटिबद्ध है। सच्चे सन्त अगर डरते हैं तो केवल भगवान् से। संसार की अन्य कोई भी ताकत उनकी आवाज को दबा नहीं सकती। संसार की समस्त शक्तियां यदि एक ओर हो जायं तब भी वे पराभूत नहीं किये जा सकते। इस असीम साहस और निर्भयता का स्रोत भगवान् ही है। जिन सन्त महात्माओं के जीवन में बिलकुल समता की दृष्टि आ जाती है, पशु पक्षी तक भी उन्हें स्नेह की दृष्टि से देखने लगते हैं। किसी वस्तु से डरने का तात्पर्य यही है कि हम उसके साथ अपनी एकता अनुभव नहीं करते और उसमें सत्य सनातन भगवान् का अंश नहीं देखते।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सत्य
प्रेम
न्याय
अखण्ड ज्योति
-मथुरा-

मथुरा १ मार्च सन् १९४७ ई०

जादूगरी या छल

जादू के खेल इन पंक्तियों के पाठकों ने अनेक बार अवश्य देखे होंगे। इन खेलों को देखकर सभी को आश्चर्य कौतूहल होता है। जैसे-जैसे ज्ञानका प्रकाश बढ़ता है वैसे-वैसे लोगों कोसमझ में यह आता जाता है कि यह खेल है। इसका आधार हाथ की सफाई और चतुरता है। परन्तु फिर भी ऐसे अनेक लोग हैं जो जादू के खेलों में भी किसी भूत प्रेत का, देवी देवता का या सिद्धि साधना का आधार देखते हैं। अशिक्षित, अनजान, भोले भाले, छलछिद्रों के वातावरण से दूर रहने वाले, ग्रामीण ही नहीं, पढे लिखे शहरी और अपने को शिक्षित कहने वाले लोग भी भ्रम में पड जाते हैं और वे इन खेलों में किसी अदृश्य सत्ता का हाथ देखने लगते हैं।

अपरिपक्व बुद्धि के नवयुवक एवं अंध विश्वास के वातावरण में पले हुए तथा अदृश्य देवी देवताओं पर अधिक भरोसा करने वाले वयोवृद्ध लोग विशेष रूप से इन कौतहलों से प्रभावित होते हैं। हमें भी अपने जीवन के आरंभिक दिनों में ऐसे ही वातावरण में होकर गुजारना पड़ा है। बालकपन में गांव में बाजीगरों के अनेकों प्रकार के खेल हमने देखे थे। हमारी जन्मभूमि खुश हाल लोगों की बडी बस्ती में है, वहां भिक्षुक वृत्ति के लोग बहुत आया करते थे। रीछ वाले, बन्दर वाले, नट, बाजीगर, गवैये, स्वांगिये, रासधारी, बाबाजी जैसे लोगों का तांता लगा ही रहता था। उनके अनोखे अनोखे चरित्र बडा कौतूहल उत्पन्न करते थे।

इन सब को देखने में हमें बडा रस आता था। बाजीगरों के खेल इन सब में विशेष रूप से प्रिय लगते थे क्योंकि उनमें रहस्य छिपे रहते थे। मनुष्य का स्वभाव छिपी हुई बातों को, रहस्य मय भेदों को, जानने के लिए विशेष रूप से उत्सुक होता है। जादूगर के तमासे ऐसे अद्भुत होते हैं कि उनका कारण समझमें नहीं आता। अनहोनी बातें जो संसार की साधारण व्यवस्था में आमतौर से दृष्टि गोचर नहीं होती पर जादूगर उन्हें कर दिखाता है। यह असाधारण, अलौकिक प्रदर्शन साधारण बुद्धि कोस्तभित कर देता है। मस्तिष्क उसका कारण ढूंढ नहीं पाता और संभ्रम में पड़ा रहता है। हमारी भी यही दशा थी। अपनी अपरिपक्व बुद्धि कछ निर्णय निकालने में समर्थ थी। बाजीगर खेल करते समय बीच-बीच में देवी देवताओं का आह्वान करता था और मंत्र पढता था। इससे दर्शक पर यह प्रभाव पडता था कि यह अद्भुत बातें देवताओं के अथवा मंत्रों के बल से होरही हैं। घर आकर जब बड़े बूढ़ों से पूछते तो वह भी "सेबड़े की विद्या" 'देवी की सिद्धि'। आदि बातें कहते थे। उस समय जादू के रहस्य हमारे लिए एक प्रमुख पहेली थे।

खेल देखने केबाद कभी-कभी मस्तिष्कमें विचारों कल्पनाओं और आकांक्षाओंकी घुड़दौड मच जाती। यदि यह विद्या हमें आजाय तो फिर बड़े बड़े काम किये जा सकते हैं। हाथ मेंधूल लेकर ऊपर से लकड़ी फिरा कर रुपया बना लिया करेंगे। इस प्रकार दो चार हजार रुपया नित्य बनाये जासकते हैं। बाजीगर जैसे पिटारी में खरगोश, कबूतर, न्यौला आदि बना देता है वैसे ही हम घोड़े, हाथी, गाय, भैंस आदि जब चाहे तबबना लिया करेंगे। तरह-तरह की चीजें देवी देवताओं के द्वारा मंगाना और पास की चीजों को गायब कर देना कितनी बड़ी शक्ति है। मित्रों के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लिए, स्वजनों और संबंधियों के लिये उनकी जरूरत की चीजें तुरन्त मँगालिया करेंगे और जो अपने से लड़ाई झगड़ा करेगा उसकी चीजों कोजादू के जोरसे उड़ा दिया करेंगे। फिर तो चारों तरफ हमारी धाक बँध जायगी, जहां जाओ वहीं राजाओं की सी आवभगत होगी। इस प्रकार की अनेकों आशा उत्साह और वैभव की रंग बिरंगी कल्पनाएं मन में घुमड़ती पर वे जहां की तहां रह जातीं। अपने जादूगर बनने का कोई मार्ग समझ में न आता था, कोई उपाय सूझ न पडता था।

गांव के स्कूल की पढाई समाप्त करके आगे की शिक्षा के लिए शहर में आना पड़ा। वहां भी कई बार एक से एक आश्चर्य जनक खेल देखे। देहाती फूहड़ बाजीगरों की अपेक्षा इन शहरी सफेद पोश जादूगरों के खेल और भी अधिक आकर्षक होते थे। बचपन की अटपटी कल्पनाएं तो अब न उठती थीं इतना तो समझ में आगया था कि यह सब बनावटी बातें हैं परन्तु तोभी उनके प्रति काफी आकर्षण था, जिस प्रकार जादूगर लोग दूसरों को आश्चर्य में डालकर अपना सिक्का जमाते हैं, वैसी स्थिति प्राप्त करना भी कुछ कम आकर्षक न जँचता था। मन में यह इच्छा उठा करती थी कि किसी प्रकार "जादूगरी विद्या" सीख पाते तो बडा अच्छा होता।

इच्छा में प्रबल शक्ति है। वह ऐसे ही अवसर प्रस्तुत करती रहती है जिस से अभीष्ट वस्तु प्राप्त हो सके। जादूगरों और बाजीगरों से सम्पर्क स्थापित करने की दिशा में कदम उठाया गया। वेलोग अपनी भेद भरी रोजी का रहस्य प्रकट करके अपना व्यापार नष्ट करने के लिए आसानी से तैयार नहीं होते। अपने भेदों को बड़ी सावधानी से छिपाये रहते हैं। उन लोगों के इन मनोभावों के कारण सफलता बड़ी कठिनता से, बहुत धीरे-धीरे काफी धन खर्च करने और शिष्यत्व स्वीकार करके अत्यन्त विनम्र सेवा चाकरी करने पर मिली। थोडा-थोडा करके स्कूली शिक्षा में साथ साथ पांच वर्ष में जादूगरी भी सीख ली इन खेलों के सीखने में लगभग एक हजार रुपया हमें खर्च करना पडा और इतना समय लगाना पडा जिससे शिक्षा में काफी बाधा पडी, एक वर्ष तो फेल होते-होते ईश्वर की कृपा से ही बच गये।

जो खेल हमने सीखे हैं। उनकी संख्या इन पृष्ठों पर लिखे हुए खेलों की अपेक्षा अनेक गुनी है। उन सब को लिख कर इस मँहगाई के समय में अधिक कागज खर्च करने की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। उनमें से कितनों ही की तो याद भी नहीं रही है कितने ही ऐसे हैं जोइन पृष्ठोंपर लिखे हुए खेलोंके आधार पर ही होते हैं। केवल वस्तुएं बदल जाती हैं, जैसे अँगूठी गायब करके बक्स के अन्दर सेनिकालना, और रुपया गायब करके लिफाफे में से निकालना यह दो खेल देखने में अलग-अलग दिखाई पडते हैं पर तरीका एक है। एक-एक तरीके से वस्तुएं बदल-बदल कर सैकडों खेल बनाये जासकते हैं। इस प्रकार दस पांच तरीकों के आधार पर ही हजारों खेल दिखाये जा सकते हैं। इतना विस्तार करने का न तो हमें समय है और न पाठकों का लाभ। इन पृष्टों को लिखने का केवल मात्र हमारा प्रयोजन यह है किजिन लोगों को जादूगरी के खेलों कोदेख कर विशेष कौतूहल होता है और जो उनका ठीक कारण नजानने के कारण मनमें गलत धारणाएं स्थापित करते हैं उनका भ्रम निवारण होसके। अपरिपक्व अवस्था में हम स्वयं जितने इस दिशा में आकर्षित हुए थे, इसके आधार पर बडी-बडी निराधार कल्पनाऐं करने लगे थे, तथा सीखने में बहुमूल्य समय एवं इतना धन व्यय करने को उद्यत हुए सम्भव है अन्य व्यक्तिभी इसी प्रकार लालायित हों उनकी उत्सुकता को शान्त करने के लिए यह पंक्तियां लिखी जारही हैं। हमारे पास प्रतिदिन सैकडों पत्र आते हैं, उनमें से नित्य अनेक पत्र ऐसे आते हैं जिनमें जादूगरी और योग का क्या संबंध है इस विषय में जिज्ञासा प्रकट की जाती है कितने ही पाठक इन खेलों को सीखने की उत्सुकता प्रकट करते हैं ऐसे लोगोंकी उत्सुकता इन पृष्टों को पढने से दूर होजायगी।

जादूगरी के खेलों में छल प्रधान है। हर एक खेल इस मनोवैज्ञानिक तथ्य पर निर्भर है कि इससे मनुष्यको धोखे में डाला जासकता है। कोई व्यक्ति कितना

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ही चतुर तार्किक एवं होशियार क्यों न हो उसमें कुछ न कुछ विश्वास का अंश होता ही है। इस विश्वास के छोटे अंश के साथ ही छल किया जाता है और दर्शक भ्रम में पड़ जाते हैं। किसी खेल को दिखाते समय जादूगर मोटे तौर पर संदेह निवारण करा देता है, दर्शक उतने से ही सन्तुष्ट हो जाता है और अधिक गहराई में नहीं जाता, बस उसी भूल से लाभ उठा कर जादूगर अपने करतब करता है और अपनी सफलता पर प्रसन्न होता है। यदि दर्शक बिलकुल अविश्वासी बन जावे और जरा भी विश्वास न करे हर चीज की तलाशी ले, तो सारी जादूगरी धूलि में मिल सकती है। चुनौती देकर एक भी खेल कोई आदमी नहीं दिखा सकता।

इन खेलों को दिखाने से मनुष्य का स्वभाव धोखा देने का, छल करने का और दूसरों के विश्वास का अनुचित लाभ उठाने का अभ्यास पड़ता है! यह बातें धीरे-धीरे स्वभाव में शामिल हो जाती हैं, जिससे मनुष्य का सदाचार चरित्र बल, नैतिकता, सात्विकता, पवित्रता, सरलता एवं सद्भाव नष्ट होता है। तेजाब को शरीर के किसी भी भाग में कितनी ही कम मात्रा में प्रयुक्त क्यों न किया जाय वहां हानि पहुंचाये बिना नहीं रह सकता। इस प्रकार छल चाहे मनोरंजन के लिए ही क्यों न किया जाय उसके मन में आने से आत्मिक पतन ही होता है। इस लिए अखंड ज्योति के पाठकों को हमारी यही सलाह है कि वे इन खेलों का रहस्य समझ कर इन की निरर्थकता का अनुभव करलें, इनकी ओर प्रवृत्ति न बढ़ावें, अब आगे के पृष्ठों पर कुछ खेलों का तरीका बताया जाता है।

— —

छल सब से बड़ी नीचता है। जो दूसरों को धोखे में डाल कर अपना उल्लू सीधा करना है उसे निकृष्ट श्रेणी का मनुष्य समझना चाहिए।

× × ×

जो दूसरों को धोका देना चाहता है वास्तव में वह अपने आप को ही धोखा देता है।

ताशों के खेल

दर्शकों को चारों रंग के (ईंट, पान, चिड़ी, हुकम) के इक्के दिखाइये। अब इनमें से एक इक्का हटा कर अलग रख दीजिये और उसके स्थान पर एक पंजा लगा लीजिये। बस, अब शेष तीन इक्के भी पँजे बन जावेंगे।

इस खेल का रहस्य यह है कि तीन पँजे पान ईंट के लेकर उनके नीचे की दो बूंदें रेगमाल से घिस देनी चाहिए। अब इन तीन पत्तों में दो ऊपर की और एक बीच की केवल तीन बूंदें रह जावेंगी। इन पत्तों को दिखाते समय उन्हें तिरछा एक के ऊपर एक लगाना चाहिए जिससे हर एक ताश की दो बूंदें ऊपर वाले दूसरे ताश से ढक जावें सिर्फ बीच की एक बूंद दिखाई पड़े। यह एक बूंद ही दीखने के कारण वह ताश इक्का प्रतीत होता है। सबसे ऊपर हुकम का इक्का लगाना चाहिए क्यों कि एक तो आमतौर से विशेष आकृति का होता है दूसरे एक पूरा इक्का तो रखना ही पड़ेगा। इस लिए हुकम का इक्का ऊपर लगा कर चारों पत्ते दिखाते हैं इसे देखने पर किसी को यह शक नहीं होगा कि यह चारों ताश इक्के नहीं हैं।

अब एक हुकम का पंजा लीजिए और उसे हुकम के स्थान पर रख दीजिए। यह हटाने की तथा रखने की क्रिया इस सफाई से होनी चाहिए कि नीचे वाले नकली इक्कों का भेद प्रकट न होने पावे। अब इन चारों पत्तों का नीचे का भाग ऊपर की ओर और ऊपर का नीचे ओर कर दीजिए। पहले जैसे एक के ऊपर एक ताश तिरछा रख कर बूंदें दबा दी गई थी उसी प्रकार इस बार घिसा हुआ भाग दबा कर तीनों बूंदें प्रकट कर देनी चाहिए। ऊपर पंजा होने से यह सब पत्ते पंजे ही दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार एक ताश बदलने से चार ताश बदलने का खेल हो जाता है लोग इससे बहुत आश्चर्य करते हैं।

(२) चार रंग के चार बादशाह दिखाइए। उनमें से एक बादशाह हटा कर उनके स्थान पर एक सत्ता रख दीजिए, चारों ताश सत्ता बन जावेंगे।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

इस खेलका आधार तो पहले खेल का सा ही है पर अन्तर यह है कि उस में पंजों की नीचे की बूंदें घिस दी जाती थी, इसमें एक कोने से दूसरे कोने तक तिरछा (त्रिभुजाकार) तीन बादशाह काटे जाते है और उन्हें तीन सत्तोंपर चिपका देते हैं। इस प्रकार तिकोने आकार में वह ताश आधे बादशाह और आधे सत्ते होते है। दिखाते समय तिरछे एक के ऊपर दूसरा ताश रखकर दिखाते हैं। ऊपर पूरा ठीक ताश रहता है। जब बादशाह को सता बनाना होता है तो ऊपर वाले पूरे बादशाह को हटा कर उसके स्थान पर पूरा सत्ता रख देते हैं और नीचे के तीन ताशों का बादशाह वाला भाग छिपा कर सत्ते वाला भाग खोल देते हैं।

(३) एक हाथ में एक ताश लेकर दिखाया जाता है, दूसरे हाथ को खाली दिखाया जाता है। खाली हाथ को उस ताश के ऊपर फिरा देने से वह दूसरी आकृति का बदल जाता है इस प्रकार चार बार हाथ फेरने पर वह एक ही ताश चार रंग पलटता है और फिर अपने असली रूप में आता है।

इसका भेद यह है कि चार ताश लेकर उनको ठीक बीच में से लम्बाई की ओर आधा मोड़ के। एक ताश के आधे भागकी पीठ दूसरे ताश की आधे भाग की पीठ से चिपकाते हैं। इस तरह चार ताशों की आधी-आधी पीठ आपस में एक दूसरे से चिपक जाती है।

दिखाते समय बाएं हाथ में एक ताश को पूरा पूरा दिखाते हैं, तीन ताश उसकी पीठ पर चिपके रहते हैं। हाथ में पकड़ते समय सावधानी रखी जाती है कि कहीं बीच से मुड़ न जाय या पीठ के चिपके ताश दिखाई न दे जाय। दूसरे हाथ को मंत्र चलाने जैसी मुद्रा बना कर उस ताश पर हाथ फेरते हैं। इसी बहाने एक पत्ते को पलट दिया जाता है जिससे दूसरी आकृति सामने आजाती है। इसी प्रकार हाथ फिराने से चार प्रकार के ताश दिखाई देते हैं।

(४) एक कोनेपर एक ताश को पकड कर दर्शकों को दिखाते हैं यह छक्का होता है। उसे जरा सा हवा में हिलाने पर चौआ हो जाता है। ताश को दोनों ओर से दिखा देता पर और दूसरे हाथ का स्पर्श न होने पर यह खेल बहुत आश्चर्य जनक और विना लाग लपेट का मलूम पड़ता है।

रहस्य यह है कि किसी भी रंग का एक छक्का लेकर उसके बीच की बूंदों में से एक ओर की एक बूंद रेगमाल से या चाकू से मिटा देते हैं खेल दिखाते समय अँगूठा और तर्जनी के सहारे उस छिले हुए स्थान को पकड कर दिखाते हैं, दर्शक पांच बूंदें देखते हुए भी उसके छक्का होने का विश्वास कर लेते हैं। ताश को जरा हवा में हिला कर इसे दूसरी तरफ बदल देते हैं और छिले हुए स्थान की बराबर वाली बूंद को उंगली और अँगूठे से दबा देते हैं। अब यह चौआ दीखने लगता है।

(५) ताशों की एक गड्डी लेकर उसमें सारे किस्म के पत्ते दर्शकों को दिखा दीजिए। अब इस गड्डी को लेकर सब दर्शकों के पास जाइए और कहिए कि एक पत्ता निकाल कर पहचान लें और उसे मन में याद रखों। उसी प्रकार स्वेच्छापूर्वक सब को पत्ते निकालने और पहचानकर मनमें याद रखने के लिए कहें। जब दस बीस पचास चालीस आदमी अपने-अपने पत्ते पहचान चुके तो गड्डी को उठा कर एक ओर रख दीजिए और केवल एक ताश हाथ में लेकर चलिए। लोगों से कहिए कि मेरे हाथ में यह जादुई ताश है वह सब लोगों के पहचाने हुए ताश की शक्ल में बदल जाता है। उस ताश को जिसे भी दिखावेंगे वही कहेगा कि यही मैंने पहचाना था।

इस खेल का भेद यह है कि कोई एक ताश २६ कीसंख्या में लिया जाता है। २६ गड्डी पैकिटों में मान लीजिए आपने चिडी की २६ बेगमें निकाल लीं। इनको नीचे ऊपर जरा-जरा सा कैंची काट दीजिए। काट देने से वह अन्य ताशों की अपेक्षा कुछ छोटी हो जावेंगी। अब इस क्रम से पत्ते लगाये जांय कि एक बेगम एक सादा, एक बेगम एक सादा, इस प्रकार बनाई हुई गड्डी के नीचे भाग को हाथ में पकड लिया जाता है और ऊपर भाग को जल्दी-जल्दी खर्राटे के साथ लोगों को

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के हाथों खूब फेंटवा दीजिए ताकि किसी प्रकार का सन्देह न रहे। अब आप आंख से पट्टी बांध कर गड्डी को हाथ में लेते ही उस पहचाने हुए ताश को निकाल कर दे सकते हैं।

भेद यह है कि इस गड्डी को दोनों बगलों के नीचे वाले हिस्से को रेगमाल से थोडा थोडा घिस दिया जाता है। जिससे उधर का भाग जरा छोटा पड जाता है। जैसे ही कोई दर्शक गड्डी में से पत्ता खींच कर अपने पास ले जाता वैसे ही जादूगर उसे उधर से उधर को फेर देता है। दर्शक जब वापिस उस पत्ते को गड्डी में मिलाता है तो उसका बडा ऊपर वाला भाग अन्य पत्तों के नीचे के छोटे भाग की ओर होजाता है। आंखों पर पट्टी बांध कर टटोलने से मालूम पडजाता है कि किस ताश का कोना बडा हुआ है। उसे ही निकाल कर बता दिया जाता कि यह पहचाना गया था।

(१०) दर्शक जो ताश पहचाने उसे गड्डी में मिलवा दीजिए। आवाज देने पर यह ताश उछल कर दूर जा गिरेगा।

कारण यह है कि उन्हीं ताशों के बीच में नीचे की ओर लचीली रबड का टुकडा बांध देते हैं। नं० ४ या नं० ६ के तरीके से दर्शक को कोई ताश पहचनवाते हैं जिससे यहतो तुरन्त मालूम हो जाता है कि इसने कौनसा पत्ता देखा था। उसी ताश को रबड लगे पत्तों के बीच में लगा देते हैं और हाथ से दबा के पकड़े रहते हैं। जब आवाज देते हैं कि पहचाना हुआ ताश बाहर निकले तो हाथ को जरा ढीला कर देते हैं। ढील पाते ही रबड के दबाव के कारण ताश उछल कर दूर जा गिरता है।

(११) लोगों का पहचाना हुआ ताश गड्डी में से अपने आप दो फुट ऊपर उडता हुआ जादूगर के दूसरे हाथ में पहुंचता है। जादूगर उसे सब का दिखाता है। ताश के अपने आप ऊपर उडने का दृश्य बडा मनोहर होता है।

इस खेल का भेद यह है कि जादूगर काला कोट पहनता है। कोट में काले बटन होते हैं। बटन में काला रेशमी या कि डोरा या लम्बा बाल बँधा होता है। और या बाल के दूसरे सिरेपर मोम और राल मिलाकर बनाया हुआ चिपकना गाढा मसाला लगा होता है। पीछे बताये हुए तरीकों से यह मालूम होता है कि कौन सा ताश दर्शक ने पहचाना है। उसकी पीठपर चिपकना मसाला आहिस्त से चिपका देता है और दूसरे हाथ को ऊपर उठाता है। हाथको उठाने के साथ ही डोरेको ऊपर उठाता है जिससे ताश ऊपर उठता है और जादूगरके दूसरे हाथ से जा सटता है।

रुमाल के खेल

(१२) एक रुपया लेकर रुमाल के बीचों बीच रखिए और उसे किसी आदमी के हाथ में देदीजिए उस आदमी से कहिए कि रुपये को जोरसे पकड़े रहे कही उड न जावे। थोडी देर इधर उधर की बातें करके रुमाल को उसके हाथ से लीजिए रुपया कहीं भी न मिलेगा।

कारण यह है कि रुमाल के चारों किनारे एक-एक इंच चोड़े दुहरे सिलवाये जाते हैं उनके एक कोने पर किसी धातु का बना हुआ रुपये जैसा गोल टुकडा सिलवा देते हैं। जिस समय किसी आदमी को रुपया समेत रुमाल पकडने के लिए दिया जाता है उस समय सफाई के साथ रुपये को तो निकाल लेते हैं और कोनेमें सिले हुए गोल टुकड़े को उसके हाथ में पकडवा देते हैं, पीछे जब रुमाल वापिस लिया जाता है तो उसमें कुछ नहीं निकलता। सिले हुए टुकड़े वाले कोने को पकड कर जादूगर इस रुमाल को भली प्रकार हिला-डुला देता है, जिससे सन्देह का निवारण हो जाता है।

(१३ एक पीतल या कांच का गिलास रुमाल मे ढंक कर किसी आदमी के हाथ में पकडवा दीजिये। थोडी देर इधर-उधर की बातें करने के बाद रुमाल वापिस मांगिए और उसे सब लोगों के सामने झाड दीजिए — उसमें गिलास नहीं निकलेगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जिस प्रकार रुपया गायब करने वाले खेल में एक कोने पर रुपये की शकल का धातु का टुकड़ा सीं दिया जाता है वैसे ही इस खेल में एक कोने पर उस छोटे गिलास की बराबर कांच की चूड़ी सी दी जाती है। रुपये को पकड़ते समय तो दर्शक रुमाल को मुट्ठी में पकड़ता है पर गिलास पकडने का तरीका दूसरा है। पांचों उगलियों से चूडी के किनारों को इस प्रकार लटकता हुआ पकडवा देते हैं जैसे लोटे को हाथ में लटका कर टट्टी के लिए ले जाते हैं। इस प्रकार पकडने से रुमाल नीचे की ओर झूलता रहता है और पकड़ने वाले को यह पता नहीं चल पाता कि उसके हाथ में चूड़ी है या गिलास। गिलास जैसी बडी चीज के हाथों हाथ गायब होने का लोगों को बहुत अचँभा होता है।

(१४) कोई डिब्बा टोप या टोकरी खाली दिखाए। थोडी देर में इसमें से ढेरों रुमाल निकाल निकाल कर दिखाते जाइए। खाली हाथ दिखा कर हाथों में से भी अनेकों रुमाल निकाल कर दिखाये जा सकते हैं।

इस खेल के लिए बहुत ही बारीक रेशम के छोटे छोटे रुमाल तैयार किये जाते हैं। इनकी तह करके दवा-दबा कर रखा जावे तो थोडी जगह में दर्जनों रुमाल आ सकते हैं। उन्हें लपेट कर एक छोटी गेंद सी बनाली जाती है। खेल दिखाते समय टोप, डिब्बा, टोकरा खाली दिखाया जाता है। इसके बाद उसे मेज पर रखते समय, या हाथ में जादू का डंडा उठाते समय उस गेंद को मेज पर से उठा लेते हैं और फिर रुमालों को खोल कर ढेर लगाते हैं।

(१५) एक रुमाल लेकर दर्शकों के सामने जला दीजिए। आवाज देने पर मेज के ऊपर रखी हुई सफेद बोतल के भीतर रुमाल अपने आप ऊपर उठता नजर आवेगा।

इस खेल के लिए एक ही किस्म के दो रुमाल लिये जाते हैं। एक सफेद बोतल का पेंदा कांच काटने वालों से कटवा कर अलग करवा लिया जाता है। इस बिना पेंदे की बोतल में नीचे की ओर एक अगुल ऊँचाई तक काला रंग लगा देते हैं। इस बोतल के भीतर एक रुमाल रख दिया जाता है। और उसके एक कोने में बोतल के रंग का पतला रेशमी डोरा बांध कर बोतल के मुँह से ऊपर निकाल दिया जाता है।

एक रुमाल को दर्शकों के सामने जला देने के बाद बोतल में पड़े हुए डोरे को दूर से खींचते हैं डोरे के सहारे रुमाल ऊपर उठने लगता है लोग समझते हैं कि जला हुआ रुमाल बोतल के अन्दर फिर से पैदा हो रहा है।

(१६) जादूगर एक मोटा कागज सब को दिखाता है। उसको लपेट कर गोल पोला फूंकना सा बना देता है। उस में एक सिरे से सफेद रुमाल ठूंसने आरंभ किये जाते हैं, यह दूसरी ओर से रंग बिरंगे बनकर निकलते हैं। सादा कागज के फूंकने को उस प्रकार रंगाई का कारखाना देख कर लोगों को बडी हैरत होती है।

इस खेल का रहस्य यह है कि कागज को गोल करके फूंकन बनाते समय रंगीन रेशमी रुमालों की एक छोटी सी पोटली बीच में रख देता है। एक सिरे से सफेद रुमाल ठूँसता है। दूसरी ओर से वे बीच में रखे हुए रंगीन रुमाल सरक-सरक कर बाहर निकलने लगते है जब सब रंगीन रुमाल निकल चुकते हैं तो जादूगर दर्शकों को कहता है कि आप ऐसा न समझें कि इस कागज के फूंकना के भीतर कोई चोरी की बात है। उस कागज को वह फिर खोल कर चौरस कर देता है उसके भीतर सिर्फ सफेद रुमाल ही होते हैं। देखने वालों को जादूगर की विद्या पर विश्वास हो जाता है।

(१७) जादूगर एक रुमाल हाथ में लेकर एक बोतल में ठूंसता है। फिर दर्शकों को कहता है कि यह रुमाल उचट कर पास रखी हुई दूसरी बोतल में अपने आप घुसेगा। सचमुच होता ऐसा ही है। दर्शक अचँभा करते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

होता यह है कि जादूगर के हाथ में रबड (साईकिल का बालट्यूब) बँधा होता है। उसका एक सिरा एक रुमाल के कोने में मिला होता है। इसी रुमाल को वह बोतल में ठूंसता है। पास रखी हुई दूसरी बोतल के भीतर पेंदे में एक दूसरा रुमाल रखा होता है। और उसके एक कोने में बँधा हुआ बारीक डोरा बोतल से बाहर निकला होता है।

खेल करते समय पहला हाथ जो पहली बोतल के पास ही रखा था उसे जादूगर झटका देता है। झटका लगते ही रुमाल बोतल से बाहर निकलता है और बालट्यूब की रबड द्वारा खिंच कर जादूगर की आस्तीन में घुस जाता है। ठीक इसी समय दूसरी बोतल के बाहर लटका हुआ डोरा चुपके से खींच दिया जाता है जिससे पेंदे का रुमाल बोतल के मुँह पर आ जाता है। दोनों काम एक साथ बड़ी फुर्ती से होने के कारण दर्शक यही समझते है कि एक बोतलका रुमाल उचट कर दूसरी में गया है।

— x —

गिलासों का खेल

एक कांच का पारदर्शी गिलास लीजिए। इसमें कोई चीज रख कर दर्शकों को दिखाइए दर्शकों में से कुछ दूसरी चीज बतावेंगे। जैसे कुछ लोग कहेंगे कि गिलास में फूल रखे हैं तो कुछ बतावेंगे कि कोयले भरे हुए हैं।

भेद यह है कि कांच का एक गिलास लेकर उसकी बीच की चौड़ाई की बराबर दर्पण के दो टुकड़े कटवा कर इस प्रकार फिट कर दिये जाते हैं कि दोनों दर्पणों का मुँह दो तरफ रहे। इस गिलास को दर्शकों को दिखाया जाय तो बीच का पर्दा मालूम नहीं पडता। दोनों ओर दो चीजें रख दी जाती हैं। गिलास को जरा मोड कर एक ओर दिखाया जाय तो एक तरफ रखी हुई वस्तु दिखाई पडती है। दूसरी तरफ मोड कर दिखाने से दूसरी वस्तु दिखाई पडती है। इस गिलास में सैकड़ों किस्म की दो दो चीजे बदल कर दिखाई जा सकती हैं और घँटों दर्शकों का मनोरँजन किया जा सकता है।

(१९) एक कांच का छोटा सा गिलास बिलकुल खाली लोगों को दिखाइए। इसमें एक रुपया डाल दीजिए। अब लोगों को कहिए कि रुपया ऊपर उडाया जा रहा है। गिलास में से रुपया निकाल कर हाथ में छिपाइए। लोग कहेंगे कि रुपया आपने इस हाथ में छिपा लिया है। उस पर आप गिलास को हिला कर दिखाइए उसमें रुपये की आवाज होगी। फिर लोगों को उस गिलास को दिखाइए उसमें कुछ नहीं होगा। पर हिलाने से हर बार रुपया खडकने की आवाज होगी। गिलास में रुपये की आवाज होना पर रुपया दिखाई न देना दर्शकों को हैरत में डाल देगा।

भेद यह है कि छोटे गिलास के भीतरी पेंदे की बराबर एक कांच का गोल टुकडा बनवा कर डाले रहते हैं। इस गिलास को ऊपर से देखने में कोई चीज दिखाई नहीं पडती, अन्दर पेन्सिल डाल कर उलटा कर देने पर कोई चीज नीचे नहीं गिरती इस प्रकार दर्शक उसके खाली होने का विश्वास कर लेते हैं जब इस गिलास को हिलाया जाता है तो वह कांच का गोल टुकडा खडखडाता है और ऐसा मालूम पडता है मानों रुपया खडक रहा है। इस गिलास को जरा पानी से तर कर लेते हैं जिससे गिलास उलटा करके दिखाने पर भी पेंदे में पडा हुआ कांच का गोल टुकडा उसी में। चिपक कर रह जाता है। गिरता नहीं।

(२०) एक कांच के गिलास में काली स्याही पेन्त कर लेजाइए और चम्मच में निकाल-निकाल कर लोगों को दिखाइए। इसके बाद दर्शकों से कहिए कि आप लोग होशियार बैठें मुझे होली खेलनी है इस स्याही को आप लोगोंके ऊपर फेकूंगा। थोडी देर बाद उस गिलास को दर्शकों की ओर फेंकिए स्याही की बजाय बढ़िया फूल गिरेंगे।

इस खेल के लिए दो काँच के गिलास तैयार किये जाते हैं। एक गिलास

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

में घोल कर रखते हैं। दूसरे में मोटा काला कपडा लेकर गिलास के भीतर आ सकने लायक ठीक नाप का एक खोल बना लेते हैं। उस खोल को कांच में भीतर फिट करके अन्दर फूल भर देते हैं दोनों गिलासों को काले रुमाल से ढक कर मेज पर बराबर-बराबर रख देते हैं। फूल वाले गिलास का काला खोल रुमाल के एक कोने पर आलपिन या सूई डोरे से टांका होता है।

पहली बार स्याही वाला गिलास लेकर जादूगर निकालता है और चम्मचमे निकाल निकाल कर सब को स्याही दिखा आता है। अब उसे लौटा कर मेज पर रख देता है। और एकाध बात इधर उधर की कहने लगता है। इसके बाद गिलास उठाता है उठाने में यह चालाकी की जाती है कि पहले की बजाय दूसरा गिलास उठा लिया जाता है, चूंकि उसके भीतर काला कपडा लगा होता है इस लिए किसी को सदेह नहीं होता कि गिलास बदल गया है। अब जादूगर रुमाल पकड़ कर गिलास के पानी को दर्शकों की ओर फेंकता है, पर स्याही के स्थान पर फूल बरसते हैं। क्योंकि उस गिलास में पहले से ही फूल रखे हुए थे।

(२१) एक कांच के गिलास में लाल रंग भर लिया जाता है और जादूगर कहता कि पहली बार तो स्याही की जगह पर फूल बरसे थे पर अबकी बार ऐसा न होगा। जिसके अच्छे कपड़े होंगे वे इस रंग से रंगे जायेंगे। यह कह कर जादूगर एक चक्कर लगाता है और देखता है कि बढिया कपड़े किसके हैं, उसी के ऊपर रंग उडेल देता है। कपड़े बिलकुल सुर्ख हो जाते हैं। कपड़े वाला नाराज होने लगता है। तब जादूगर कपडों पर फूंक मारता है और रंग गायब होजाता है। कपड़े जैसे के तैसे हो जाते हैं।

यह रंग खास किस्म से तैयार किया जाता है। पानी कर अमोनिया और फुपानान नामक इंग्रेजी दवाओं की थोडी-थोडी मात्रा मिला देने से पानी का रंग लाल हो जाता है। थोडी देर में हवा लगते ही रँग उड जाता है। इसे बेच-बेच कर दुकानदार खूब लाभ उठाते हैं।

(२२) एक कांच के गिलास में सब के सामने सादा पानी भरिए। सब प्रकार विश्वास करा दीजिए कि इसमें कोई खास बात नहीं है। अब इस गिलास को उलटा कर दीजिए पानी विलकुल न फेलेगा।

इस खेल के लिए शराब पीने की कांच की प्यालियां सब से अच्छी रहती हैं। उनके तले के ठीक बराबर सलोज़ाइट, गटापार्ग या अभ्रक का गोल टुकडा काट लिया जाता है। इस टुकड़े को पानी में डुबो कर पेंदे से लगा दिया जाता है इससे वह ठीक तरह चिपका रहता है, गिरता नहीं। जब प्याली को उलटना होता है तब पेंदे में लगे हुए गोल टुकड़े को हथेली के सहारे से हटा कर प्याली के मुँह पर लगा देते हैं और उसे उलटा कर देते हैं। वह टुकडा मुंह पर चिपक जाता है और पानी नही फैलता।

(२३) एक कांच के गिलास को मुंह तक लकडी के बुरादे से भरा हुआ दिखाइए थोडी देर में यह बुरादा मिठाई बन जायगा।

इस खेल के लिए कांच के गिलास के भीतर फिट होने योग्य टीन का बिना पेंदे का गिलास जैसा ही एक खोल बनाया जाता है और उसका ऊपर का मुंह टीन से ही बन्द बनवाया जाता है। इस टीन के खोल के बाहर बाहर सब ओर सरेस पोत कर उस पर लकडी का बरादा चिपका दिया जाता है गिलास के मुंह पर विशेष रूप से कुछ अधिक बरादा लगा देते हैं जिससे गिलास ऊपर मुंह तक भरा हुआ मालूम दे। टीन पोले खोल के अन्दर मिठाई भर दी जाती है। इस प्रकार बने हुए गिलास को दर्शकों को दिखाया जाय तो यह समझा जाता है कि कांच के सारे गिलास में लकडी का बरादा भरा हुआ है।

एक टीन या कार्ड बोर्ड का एक ऐसा खोल बनाया जाता है जो इस गिलास के ऊपर पूरी तरह ढकन की तरह आ आजाय। इस ढक्कन का खोल दिखा कर उससे गिलास को ढक देते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कुछ देर बाद इस ढकन को जरा दबा कर इस प्रकार उठाते हैं कि गिलास के भीतर लगा हुआ टीन का पोला खोल उस ढकन के साथ ही खिचा चला आता है और गिलास में केवल मिठाई रह जाती है।

(२४) दो खाली गिलास मेज पर रखे जाते हैं। सिगरेट पीकर उसका धुंआ आकाश में फूंक दिया जाता है। दर्शकों से कहते हैं कि यह आकाश में उड़ता हुआ धुंआ मेरा कहना मानता है। जहां कहता हूँ वहां चला जाता है। देखिए अब इस धुंए को एक गिलास में बन्द किया जाता है। फिर एक गिलास से दूसरे में भेजा जायगा। इस कथन को अक्षरशः चरितार्थ होते देख कर दर्शक बहुत आश्चर्य करते

रहस्य यह है कि गिलास के भीतर चारों ओर ऐसिड होइड्रोकोरिक पोत दिया जाता है और गिलास ढकने की तश्तरी में टइकर अमोनिया फोर्ट पोत दिया जाता है। तश्तरी गिलास पर ऊपर को मुंह करके रखी रहने देते हैं। जब गिलास में धुंआ पैदा करना होता है तो तश्तरी को उलट कर गिलास पर रख देते हैं दोनों दवाओं का आमना सामना होने पर धुंआ पैदा होने लगता है, ढकन रखा होने कारण गिलास में धुंआ खूब भर जाता है। जब इस गिलास का धुंआ दूसरे गिलास में भेजना होता है तो धुंए वाले गिलास का मुंह खोल देते हैं उसका धुंआ निकल जाता है। दूसरे गिलास के ऊपर की तश्तरी उलटी करके रखते ही उसमें भी धुंआ पैदा होने लगता है, सिगरेट का पहले गिलास का, दूसरे गिलास का, यह तीनों ही धुंए अलग अलग हैं पर दर्शक समझते हैं कि एक ही धुंआ इधर से उधर जा रहा है।

(२५) पीतल के दो सादा गिलास लेते हैं। एक को एक हाथ में पकड़ते हैं, दूसरे को ऊपर से उस गिलास के बीच में गिराते हैं। ऊपर वाला गिलास नीचे के गिलास के पेंदे को पार करके नीचे निकल जाता है।

इस खेल में देखने वालों को दृष्टि भ्रम होता है। पीतल के छोटे ढाई तीन इंच के गिलास बाजार में बिकते हैं वे इस खेल के लिए अधिक उपयुक्त रहते हैं। गिलास को इस प्रकार पकड़ते हैं कि उंगली का पोरुवा अंगूठे और तर्जनी के सहारे से गोलाई में आधा गिलास के किनारे से सटा रहे और आधा ऊपर रहे। जब दूसरे गिलास को ऊपर से छोड़ते हैं और जब नीचे के गिलास में ऊपर का गिलास पहुँच जाता है तो तुरन्त ही जादूगर उंगली और अंगूठे का नीचे वाला हिस्सा ढीला करके ऊपर के गिलास का किनारा दबा देता है। फल स्वरूप नीचे वाला गिलास टपक पड़ता है और ऊपर का हाथ में रह जाता है। यह क्रिया इतनी जल्दी में होती है कि देखने वाले उसे समझ नहीं पाते उन्हें यही लगता है कि ऊपर वाला गिलास नीचे के गिलास का पेंदा पार करके नीचे गिरता है। जल्दी जल्दी कई बार इस खेल को दुहराने से दर्शकों को बड़ा आनन्द आता है।

बिना सामान के हो सकने वाले खेल

(२६) एक साबित केला दिखा कर लोगों से पूछा जाता है कि इसके गूदे को कितने टुकड़े में काट दिया जाय। लोग जितने टुकड़े में काटने को कहें छिलका उतारने पर उसके उतने ही टुकड़े निकलते हैं।

तरीका यह है कि जितनी जगह से जहां जहां केले के काटना हो वहां सुई चुभा कर भीतर ही भीतर चारों ओर घुमा दिया जाता है। गूदा कट जाता है और केला साबित बना रहता है। सुई का छेद अपने आप बन्द हो जाता है वह दिखाई नहीं पड़ता।

(२७) एक पैसा या रुपया किसी से लेकर हथेली पर रखिए। आवाज देते ही वह [illegible]

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पहुँचे पर होता हुआ रुपया कोहनी तक पहुँचेगा और ऊपर कन्धे की तरफ बढेगा। जादूगर तब इसे दूसरे हाथ पर ले लेता है। फिर भी वह दौड़ता ही रहता है। कंधे के पास पहुँचने पर उसे फिर दूसरे हाथ पर लेना पडता है। इसी प्रकार बार बार हाथ बदलना पडता है। जब तक जादूगर चाहे तब तक रुपया दौडता ही रहता है। उसकी आज्ञानुसार रुपये की चाल धीमी व तेज भी हो जाती है।

इस खेल के लिए काले कपड़े पहनने पडते हैं। कमीज या कोट के बटन वाले छेद में एक काले रंग का बहुत पतला रेशमी डोरा या मनुष्य के सिर का लम्बा बाल लेकर उसका एक छोर बांध देते हैं। दूसरे छोर में अलकतरा में राख मिला कर उसकी छोटी गोली लगा देते हैं रुपया लेकर जब चलाने का समय आता है तो उस अलकतरा की गोली को हथेली पर रख कर उस पर रुपये की पीठ चिपका देते हैं। अब हाथ को आगे बढाना शुरु करते हैं, रुपया जहां का तहां रहता है डोरे या बाल से खिचा रहने के कारण वह हाथ के साथ साथ आगे नहीं चलता। हाथ चलता है, रुपया नहीं चलता पर दर्शकों को ऐसा मालूम पडता है कि रुपया चल रहा है। हाथ बहुत आगे बढ जाने पर रुपया कुहनी तक पहुँच जाता है तब उसे दूसरे हाथ पर ले लेते हैं।

(२८) जादूगर हवा में हाथ मार कर एक रुपया मंगाता है। दूसरे हाथ में एक डिब्बा पकड़े रहता है। मँगाये हुए रुपये को डिब्बे में छोडता जाता है। इसी प्रकार हवा में मार कर अनेकों रुपये मंगाता है और डिब्बे में छोडता जाता है। एक दो दर्जन रुपये जमा हो जाने पर डिब्बे को पलट कर दर्शकों को दिखाता है। लोग बहुत अचंभा मानते हैं।

बांए हाथ की हथेली में बीस पच्चीस रुपये की गड्डी दबा कर डिब्बे को इस प्रकार पकडते-

और हथेली तथा उँगलियां भीतर चली जाती हैं। बांए हाथ की हथेली में एक रुपया दबा रहता है। हवा में दाहिने हाथ को झटक कर इस प्रकार का भाव बनाते हैं मानों ऊपर आकाश में से रुपया प्राप्त किया गया हो। हथेली में छिपे हुए रुपये का डिब्बे में डालने की क्रिया प्रदर्शित करते हैं। इस समय रुपये को तो फिर हथेली में छिपा लेते हैं और झूँठ मूंठ हाथ का इशारा डिब्बे की तरफ कर देते हैं। इसी समय बांए हाथ की हथेली में छिपे हुए रुपयों में से एक रुपया डिब्बे में खिसका देते हैं। उसी समय में दाहिने हाथ द्वारा रुपये को डिब्बे में डालने का इशारा होना और उसी समय डिब्बे में रुपया गिरने की आवाज होना, यह दोनों बात एक साथ होने से दर्शकों को पूरा विश्वास होजाता है कि दाहिने हाथ वाला रुपया ही गिरा है। जब तक बांए हाथ की हथेली में छिपे हुए रुपये एक एक करके सब डिब्बे में गिर नहीं जाते तब तक दाहिने हाथ को हवा में मार कर, हथेली में छिपे रुपयों को दिखा कर बार-बार रुपये बनाता रहता है।

(२९) एक हाथ में उपरोक्त प्रकार से डिब्बा लेकर दूसरे हाथ से सिगरेट हवा में से मंगाते हैं और डिब्बे में डालते जाते हैं। बहुत सी सिगरेटें जमा होजाने पर दर्शकों को दिखाते हैं।

यह खेल सब प्रकार उपरोक्त रुपये वाले खेल की तरह है पर अन्तर यह है कि उसमें हथेली में रुपया छिपाना पडता है इसमें सिगरेट छिपाने का स्थान दूसरा है। सितार बजाने के लिए उँगली में एक तार का छल्ला-सा पहना जाता है, इसी प्रकार का एक बहुत बारीक छल्ला बीच की उँगली के नाप का तैयार करते हैं, उसी छल्ले के पिछले भाग में एक सिगरेट फँसा लेने योग्य एक खांचा बना देते हैं। छल्ले को बीच की उँगली के ऊपर वाले पोरुये में पहन लेते हैं और सिगरेट उँगली के पीछे छिपी रहती है। दर्शकों को उँगली चौडा कर पूरी हथेली साफ साफ दिखा देते हैं। हवा में हाथ मार कर मुट्ठी बन्द करते हैं। उँगली या पोरुवा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाती है। इस डिब्बे में डालने का बहाना करते हैं साथ ही उँगली खड़ी कर देते हैं जिससे वह सिगरेट पुनः उँगली के पीछे छिप जाती है। इस प्रकार बार-बार इस क्रिया को बार-बार दुहरा कर बहुत सी सिगरेटें बुझाते और डिब्बे में डालते जाते हैं। जब बांए हाथ में छिपी हुई सब-सिगरेटें खतम हो जाती है तो डिब्बा उलट कर दर्शकों के आगे उनका ढेर लगा देते हैं।

(३०) दर्जी लोग लोहे की एक टोपी सी उँगली में सुई दबाने के लिए पहनते हैं इस टोपी को जादूगर एक हाथ की उँगली में पहनता है। सब को दिखाता है। इशारा करते ही वह टोपी इस हाथ की उँगली में पहुँचती है। फिर इशारा करने पर उस हाथ में से पहले हाथ की उँगली में आ जाती है। बार-बार यह परिवर्तन होता है। दर्शकों का मनोरंजन होता है!

असल में दो टोपी होती है। तर्जनी उँगली खड़ी रहती है और शेष सब उगली मुट्ठी बांधने की शकल में मुदी रहती हैं जादूगर जब एक हाथ से दूसरे हाथ में टोपी भेजने का इशारा करता है तो तर्जनी को मोड़ कर अन्य उगलिया तथा अँगूठे की मोड़ के बीच में उस लोहे की टोपी को उतार देता है। दूसरे हाथ में उसी जगह दूसरी टोपी छिपी होती है उसे दूसरे हाथ की तर्जनी में पहन लेता है इस प्रकार वास्तव में एक उँगली की टोपी को जादूगर उतारता और दूसरे को पहनता रहता हैं। पर मालूम ऐसा पड़ता है मानो एक ही टोपी इस हाथ से उस हाथ में आती जाती है।

(३१) एक बेंत लेकर जादूगर उसके दोनों सिरे किसी आदमी के दोनों हाथों पकड़वाता है और बीच मे रुमाल डाल देता है। अब एक अगूठी लेकर जादूगर उसे बेंत पर फेंकने जैसा ऐक्टिंग करता है दोनों सिरे पकड़े रहने पर भी अगूठी बेंत के बीच में पहुँचती है और रुमाल हटाते ही बीच में पिरोई हुई दीखती है।

जादूगर बेंत के सिरे को किसी के हाथ में पकड़वाते समय पहले ही उसमें अपनी अंगूठी पिरो लेता है। पहले तो उसे अपने हाथ के नीचे छिपाये रहता है पीछे उसे रुमाल लपेट कर ढक देता है। रुमाल हटाते ही वह अंगूठी दीखने लगती है।

— x —

छुरी के खेल

—:x:y:x:—

(३२) एक छुरी लेकर दर्शकों को दिखाइए, थोड़ी देर उसे हवा में घुमाने पर उसकी नोंक पर सुन्दर फूल आकर गड़ जायगा।

यह छुरी इंग्लिशी उस्तरे की तरह पोली होती है। नीचे का भाग धार वाला होता है पर ऊपर वाला भाग पोला होता है। उस पोले भाग की जड़ से लेकर नोंक तक साईकिल के बालट्यूब की रबड़ डाल देते हैं। नोंक के पास एक फूल इस रबड़ से बांध दिया जाता है।

खेल दिखाते समय उस फूल को खींच कर पीछे ले जाते हैं रबड़ तन कर बढ जाती है और फूल पीछे खिंच जाता है। फूल को जादूगर मुट्ठी में दबा लेता है। इस प्रकार वह दीखता नहीं। पर जब हवा में छुरी फिराते हैं तो मुट्ठी में लगे हुए फूल को ढीला कर देते हैं। रबड़ सकुड़ जाती है और फूल छुरी की नोंक पर जा पहुंचता है।

(३३) एक चाकू लेकर किसी मनुष्य के पेट पर रखते हैं और जोर से दबा देते हैं। चाकू पेट में घुस जाता है और खून निकलने लगता है पर जब चाकू को पेट में से बाहर निकालते हैं तो कहीं भी घाव का निशान नहीं पडता। इस चाकू घुसड़ने और निकालने में किसी को जरा भी कष्ट नहीं होता।

इस खेल के लिए जो चाकू बनाया जाता है वह मुड़कर बन्द नहीं होता वरन् खुला ही रहता है और उसकी नोंक सपाट होती है। इसकी बेंटी पोली होती है और भीतर स्प्रिंग लगे होते हैं जिनके दबाव के कारण चाकू का फल यथावत खड़ा रहता है। पर जब इसे पेट पर रख कर दबाते हैं तो चाकू का फल स्प्रिंगों को दबाता हुआ बेंटा में भीतर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

घुमने लगता है। फल का बेंटी में धँसना दर्शकों को ऐसा मालूम होता है मानों इतना भाग पेट में घुस गया हो। बेंटी के भीतर लाल रंग में डुबा कर स्पेज रख दी जाती है जो स्प्रिगों का दबाव पाकर निचुड़ पड़ती है यही रंग खून जैसा दिखाई पडता है। चाकू को पेट पर से हटाते ही स्प्रिंगों को दवाब से फल बाहर निकल आता है चूंकि चाकू पेट में घुसा ही न था इस लिए घाव होने या कष्ट होने का कोई कारण ही नहीं होता।

३४) नाक, गरदन, हाथ या किसी अन्य अंग से एक छुरी या तलवार मारी जाती है तलवार का बीच का हिस्सा उस अँग में काफी गहरा घुस जाता है। इस प्रकार घुसी हुई तलवार को यों ही अधर लटकती छोड़ देते हैं। बिना किसी लाग लपेट के इस प्रकार स्पष्ट रूप से शरीर में घुसी देख कर दर्शक बहुत आश्चर्य करते हैं।

इस खेल के लिए खांचेदार छुरी या तलबार बनाई जाती है जिस अँग को कटा हुआ दिखाना है उसके ठीक नाप का एक खांचा छुरा के बीच के भाग में धार की ओर कर दिया जाता है। इस खांचे को उस अँग में फिट कर देते हैं। बिना कमानी के चश्मे जिस प्रकार नाक में फिट हो जाते हैं और नीचे नहीं गिरते उसी प्रकार यह छुरी भी उस अँग के साथ सट कर अटक जाती है और गिरती नहीं।

(३५) एक चाकू लेकर उससे नीबू काटते हैं। नीबू में से रस की वजाय खून निकलता है।

चाकू को कटहल के दूध में तर करके सुखा लेते है। कटहल के दूध और नीबू की खटाई का संमिश्रण होने पर रस का रंग लाल हो जाता है। लोग उसे खून समझते हैं।

◆

समान के सहारे होने वाले खेल

—:×Y×:—

(३६) रुई ओटने की दो बेलन बाली चर्खी के समान एक लकड़ी की चर्खी लेकर उसमें एक तरफ से सादा कागज लगाते हैं दूसरी ओर से असली नोट छपा हुआ तैयार हो कर निकलता है। कई सादे कागज लगा कर कई नोट तैयार करके दिखाये जा सकते है।

इस चर्खी के दोनों बेलनों के बीच एक लम्बी कपड़े की पट्टी का एक सिरा एक चर्खी के बेलन में बारीक चोवों के सहारे जड़ दिया जाता है और दूसरा सिरा दूसरे बेलन में जड़ा होता है। पट्टी बेलनों से लपेटी रहती है। इस लपेट के पर्तों में पहले से ही नोट लपेट दिये जाते हैं एक तरफ से जब सादे कागज लगाये जाते हैं तो वे पट्टी के पर्तों में भीतर चलते जाते हैं। दूसरी ओर से वे नोट बाहर निकलने लगते हैं जो पहले से ही पर्तों के अन्दर भरे हुए थे। दर्शक समझते हैं कि चर्खी जादू की बनी है जो तुरन्त ही कागज को नोट बना देती है। इस खेल के लिए नये नोट लिए जाते हैं।

(३७) एक आर पार छेद का लकड़ी का गोला लेकर उसमें डोरी पिरो दी जाती है। डोरी का एक सिरा जमीन की ओर दूसरा आसमान की ओर करके दोनों हाथों से पकड़ लेते हैं। जादूगर जब आज्ञा देता है तब गोला चलता है जब रुकने को कहता है तो रुक जाता है। तेज और धीमी चाल भी वह गोला जादूगर के कहने पर चलता है।

यह गोला विशेष रीति से बनाया जाता है। लकड़ी का एक सादा गोला बनवा कर उसे बीच में से चीरते हैं और भीतर की लकड़ी खोद-खोद कर उसे पोला कर लेते हैं। इसके आधे भाग में एक चोबा लगा देते हैं। डोरी आर पार डालने के लिए जहां छेद रखा गया है वहीं से एक डोरी निकाल कर उसे चोबे के नीचे डाली जाती है और दूसरी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ओर के छेद में होकर उसे निकाल देते हैं। अब उस गोले के दोनों भाग सरेस में चिपका दिये जाते हैं और ऊपर रङ्ग कर दिया जाता है जिससे कि उसका चिपका हुआ होना मालूम न पड़े।

डोरी छेद में सीधी आर पार गई हुई दिखाई पड़ती है पर वास्तव में वह चोबे की बगल में होकर तिरछी आती है। इसलिए जब डोरी को जरासा कड़ा कर दिया जाय तो गोला रुक जाता है। जब थोड़ी-सी ढील दी जाय तो नीचे चलने लगता है। जब अधिक ढील दी जाती है तो अधिक तेजी से चलता है और जब थोड़ी ढील रहती है तो धीरे धीरे नीचे उतरता है।

(३८) एक दियसलाई का बक्स खोल कर जादूगर सब को दिखाता है, यह बिलकुल खाली होता है पर जहां फूंक मार कर दुबारा दिखाता है तो बक्स दियासलाईयों से भरा होता है। इसे कितनी ही बार खाली और भरा दिखाया जाता है।

दियासलाई की डिब्बी के ऊपर जो तस्वीर हो, उसी प्रकार की एक और डिब्बी लेकर उसकी तस्वीर पानी में भिगो कर उतार लेते हैं। और उसे पहली डिब्बी की पीठ पर चिपका देते हैं। दोनों ओर से वह तस्वीरदार बन जाती है। अब भीतर की दो दराज निकाल कर उसकी पीठ पर सरेस के सहारे बराबर बराबर एक लाइन में दियासलाइयां चिपका देते हैं।

खेल दिखाते समय पहले खाली दराज दिखाते हैं। फिर फूंक मारने के बहाने उसे उलट देते हैं। दूसरी ओर दराज की पीठ पर चिपकी हुई दियासलाइयां दिखाई जाती हैं। इधर से डिब्बी भरी हुई मालूम होती है। दोनों तस्वीरें चिपकी रहने के कारण उलटने का भेद प्रकट नहीं हो पाता।

(३९) एक पोली नली में चौड़ाई की ओर आर पार छेद करके एक लम्बा डोरा डाल देते हैं। डोरे को एक ओर खींचने पर वह लाल रङ्ग का होता है दूसरी ओर खींचने पर वह हरा हो जाता है।

पोली लकड़ी के एक सिरे पर ठीक सीध में दो छेद किये जाते हैं, दूसरे सिरे में एक पतली लोहे का पिन या कील ठोक देते हैं। एक सिरे के छेद से पिन तक जितनी लम्बाई है उसमें दूना डोर लिया जा सकता है, इसे आधा एक रङ्ग का और आधा दूसरे रङ्ग का रङ्ग देते हैं। अब डोरे को एक ओर के छेद में पिरो कर नीचे पिन की तरफ ले जाते हैं और फिर पिन को दूसरी ओर से मोड़ कर वापिस लाते हैं और दूसरी तरफ के छेद में होकर पार निकाल देते हैं। देखने वाले समझते हैं कि डोरे को एक अंगुल की नली ही पार करनी पड रही है पर वास्तव में वह नली की लम्बाई का दूना चक्कर पार करके तब दूसरे छेद में पहुँचता है। इस लम्बे फासले में ही डोरे का एक भाग ढक जाता है और पहले से ढका हुआ दूसरा रङ्ग निकल आता है।

(४०) एक कांच की बोतल के पेंदे में छेद करके उसमें पानी भर कर कार्क बन्द कर दीजिए, पानी कहीं एक बूंद भी न फैलेगा। आज्ञा देते ही पेंदे के छेद में से पानी की धार निकलने लगेगी, फिर आज्ञा देने पर धार बन्द हो जायगी। आज्ञानुसार बार बार पानी चलता और बन्द हो जाता है।

उस बोतल में दो छेद कराये जाते हैं, एक पेंदे में दूसरा गर्दन में। बोतल में पानी भर देने के बाद कार्क बन्द कर दिया जाता है। हाथ में बोतल को पकड़ कर गर्दन वाले छेद को जब तक उंगली से बन्द किये रहते हैं तब तक पेंदे के छेद से पानी नहीं निकलता। उंगली हटाते ही धार गिरने लगती है।

(४१) एक कापी के पन्ने खरखराते हुए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लोगों को दिखाने पर वे बतलाते हैं कि कापी के सब पन्ने लिखे हुए हैं। फूंक मार कर दुबारा दिखाते हैं तो कापी के सब पन्ने कोरे बिना लिखे दिखाई देते हैं।

यह कापी मोटे कागजों की बनाई जाती है और इसके बिषय (१ -५७ क्रम के सब पन्ने एक एक सूत काट कर छोटे कर दिये जाते अब इस के दाहिने हाथ की ओर से २ ३ कोरे ४-५ लिखे ६-७ कोरे ८-९ लिखे इस क्रम से पृष्ठ तैयार करते हैं। कापी तैयार हो जाने पर उसे बांई ओर से खरखराते हुए दिखाया जायगा तो सारी कापी कोरी दिखाई पड़ेगी, दांई ओर से दिखाया जायगा सब पन्ने लिखे हुए नजर आवेंगे।

(४२) दो स्लेटें लेकर दोनों ओर खाली दिखा दी जाती हैं। उन्हें पानी से भीगे हुए कपड़े से पोंछ भी देते हैं जिससे उन पर कुछ लिखे होने का किसी को सन्देह न हो। इन स्लेट को दूर एक दूसरे के ऊपर रख दिया जाता है। खड़िया मिट्टी हाथमें लेकर जादूगर हवा में कुछ लिखता है। अब स्लेट को उठाने पर खड़िया से कुछ शब्द लिखे हुए मिलते हैं। कभी कभी कोई दर्शक कुछ शब्द बोलते हैं वह शब्द भी स्लेट पर लिखे हुए निकलते हैं।

यह दोनों एक से साइज की स्लेटें टीन की बनी हुई ली जाती हैं। एक और तीसरी स्लेट उसी तरह की लेकर उसका चौखटा निकाल कर फेंक देते हैं और बीच की टीन को इस प्रकार काट छांट कर ठीक कर लेते हैं कि उन दोनों स्लेटों के चौखट को छोड कर बीच के भाग में दिखाई देने वाली टीन के ठीक बराबर हो।

एक स्लेट के ऊपर खेल दिखाने से पूर्व ही खडिया से कुछ लिख लेते हैं और उसके ऊपर उस तीसरी स्लेट को काट छांट कर ठीक की हुई टीन को रख देते हैं। सिलेट को खाली दिखाते समय उंगली के सहारे उस पर्त को पकड़े रहते हैं जिससे वह गिरने न पावे। फिर दूर रखते समय दूसरी सिलेट को नीचे तथा लिखी हुई को ऊपर कर देते हैं जिससे वह ढक्कन नीचे वाली सिलेट के बीच में चला जाता है और पहले लिखे हुए अक्षर दर्शकों को दिखा दिये जाते हैं। यदि दर्शक के बोले हुए शब्द लिखने हों तो एक दर्शक पहले से ही अपना सिखाया हुआ बिठाया जाता है वही पहले उठ खडा होता है और वही शब्द लिखने को कहता है जो सिलेट पर पहले से ही लिखा हुआ तैयार होता है।

यदि यह खेल मेज पर दिखाया जाय तो दूसरी स्लेट की जरूरत नहीं पड़ती। स्लेट को खाली दिखा उसे औंधी करके मेज पर रख देते हैं जिससे आते समय वह टीन का टुकड़ा मेज पर पड़ा रह जाता है। और स्लेट पर अक्षर दीखने लगते हैं।

(४२) एक छोटी लकडी की रौल (जादू का डंडा) लेकर जादूगर उसे मेज पर ठोक पीट कर उसके ठीक एवं असली होने का विश्वास दिलाता है इस डंडे को एक कागज के लिफाफे में सब के सामने रखता है और लिफाफे का मुँह बन्द करके किसी आदमी के एक हाथ पर उसे रखता और दूसरे हाथ पर एक उतना ही बड़ा दूसरा कागज का खाली लिफाफा रखता है और कहता है कि मंत्र के बल से इस लिफाफे में रखे हुए डंडे को उस लिफाफे में भेज दूंगा। कुछ देर जंत्र मंत्र की मुद्रा बनाता है, बार-बार टटोल कर देखता है पर जब डंडा दूसरे लिफाफे में नहीं जाता तो नाराज होकर दोनों लिफाफों को फाड़कर फेंक देता है। दोनों में से किसी में भी डंडा नहीं निकलता तो दर्शक समझते हैं कि जादू का डंडा कहीं उड़ गया।

इस खेल में डंडे के ऊपर काले कागज का एक खोल बना कर चढा दिया जाता है। लिफाफे में बन्द करते समय डंडे को तो खींच लेते हैं और उस पर चढे हुए खोल को लिफाफे में रख दिया जाता है। उस खोल को ही दर्शक असली डंडा समझ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लेते हैं। लिफाफा फाड़ते समय अन्तमें वह लिफाफा भी फाड़ फेंका जाता है।

(४३) दर्शकों की घड़ी मांग कर जादूगर एक खरल में रखता है और उसे कूट डालता है। इसके चूर-चूर किये हुए पुर्जे सबको दिखाने के बाद उस खरल को ढक कर रख देता है। फूंक मारने के बाद ढक्कन को उठाता है तो वह घडी ज्यों की त्यों साबित निकलती है। जिसकी घडी थी वह सब प्रकार अपनी घडी की परीक्षा कर लेता है तब उसकी घडी टूटने की नाराजी शान्त होती है।

घडी कूटने का खरल दो पर्त का बनाया जाता है। इस खरल के ऊपर ढकने का एक इतना बड़ा होता है कि सारे खरल को भली भांति ढक लेता है। इस ढक्कन में एक खांचा ऐसा लगा होता है जिसमें उलझ कर खरल का एक पर्त ऊपर उठा चला आता है। दुबारा ढक कर उस पर्त को फिर उस खरल में छोड़ा जा सकता है।

दर्शक की घडी लेकर खरल में रखते हैं और उसे ढक्कन से ढक देते हैं। थोडी देर में ढक्कन उठा कर अलग रख देते हैं उसके साथ खरल का वह पर्त उठा चला आता है जिसमें दर्शक की असली घडी रखी होती है। नीचे के पर्त में एक टूटी हुई घडी के पुर्जे पहले से ही डाल रखे जाते हैं उनमें हलकी सी चोटें लगा कर घडी का चूरा दिखा दिया जाता है। इसे फिर ढक देते हैं। अब ढक्कन उठाते समय खरल का ऊपर वाला पर्त फिर उसी में वापिस छोड देते हैं। घडी ज्यों की त्यों आ जाती है, वह जिसकी थी उसको वापिस देदी जाती है।

(४४) एक डिब्बा लेकर उसको दर्शकों को दिखाता है। कोई दर्शक उसमें फूल भरे बताता है किसी को बताशे भरे दिखाई देते हैं।

इस डिब्बे के दोनों ओर मुंह होते हैं, दोनों ओर ढक्कन लगे रहते हैं। पर्दा आधी गहराई में बीचों बीच होता है। एक ओर फूल भर दिये जाते हैं, दूसरी ओर बताशे। डिब्बे को आड़ा पकड कर दिखाने ले जाते हैं। किसी दर्शक को इधर का मुंह ऊपर करके दिखा देते हैं किसी को उधर का। फल स्वरूप दो तरह की चीजें दिखाई पड़ती हैं। उस डिब्बे में कोई भी दो प्रकार की चीजें दिखाई जा सकती हैं।

(४५) कई बार जादूगर लोग मुंह में से गोली, गोले, कागज की लम्बी-लम्बी धज्जियां तथा अन्य प्रकार की चीजें ढेरों की ढेरों निकाल कर दर्शकों को आश्चर्य चकित कर देते हैं।

इस प्रकार के खेलों में यह होता है कि जो चीज मुंह में से निकालनी होती है उसे थोडी तादाद में पहले से ही मुंह में छिपाये रहते हैं। उस वस्तु का मुंह में से निकालने के बहाने हाथ ले जाते हैं और हथेली में उस वस्तु को छिपाये ले जाते हैं। मुंह में दिखाई देने वाली वस्तु को निकालते समय हाथ में दबी हुई चीज को मुंह में रख देते हैं। एक चीज मुंह में से निकाल कर दर्शकों को दिखाते हुए मेज पर रखी मेज पर हाथ रखने और फिर मुंह में से चीज निकालने के लिए ऊपर हाथ रखते समय मेज पर से उस चीज को फिर लेजाते हैं और मुंह में रख देते हैं इसी प्रकार बराबर यह क्रम चलता रहता है और ढेरों की ढेरों चीजें निकल कर जमा कर दी जाती हैं कागज की धज्जियां निकालने के लिए पहले से ही उन्हें लपेट-लपेट कर रीलें सी बना लेते हैं। एक रील को मुंह में रख कर उसे खींचते जाते हैं और ढेर लगाते जाते हैं जब वह खतम होजाती है तो दूसरी रील फिर वहां पहुँचाकर खेल दिखाते रहते हैं।

(४६) किसी चीज को गुम कर देने के बाद अक्सर जादूगर लोग उसे किसी की जेब में से निकालते हैं। इस का भेद यह है कि जादूगर उस चीज को अपने हाथ में छिपा ले जाता है और जेब में हाथ डाल कर जब वापिस निकालता है तो उस चीज को जो हाथ में छिपी थी सबके सामने प्रकट कर देता है।

— x —

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कुछ बड़े खेल

मेले तमाशों में टिकट लगा कर कुछ खेल ऐसे दिखाये जाते हैं। जिन एक दो को देखने से ही दर्शकों का काफी मनोरञ्जन हो जाता है और वे भारी संख्या में उसे देखने पहुँचते हैं। इन खेलों को दिखाने वाले काफी पैसा कमा ले जाते हैं। नीचे ऐसे ही कुछ खेलों का वर्णन किया जाता है।

—:०:—

बंद लिफाफे की बात बताना

दर्शकों को बहुत से कागज दे देने चाहिए जिस पर वे अपनी इच्छानुसार थोड़ा २ लिखें और एक छोटे लिफाफे में बन्द कर दें। इन सब लिफाफों में इकट्ठा कर लेना चाहिए। इस खेल में खास बात यह है कि एक आदमी जनता में अपना होना चाहिए जो अपनी लिखी हुई बात को पहले से ही बता दे। उसके लिफाफे पर कुछ खास निशान लगा हुआ हो जिससे वह पहचाना जा सके। अब खेल शुरू करना चाहिए। पहले कोई एक लिफाफा उठावें, उसे कान के पास ले जावें और पहले बताये हुए आदमी की बात बता दें। और लोगों से कहें अब मैं दिखाता हूँ कि यह बात लिखी है या नहीं और उसे खोल लो देखने वाले समझेंगे कि यह वही लिफाफा है जिसकी बात अभी बताई है। परन्तु वास्तव में यह वह लिफाफा है जिसे जादूगर आगे बताने को है। इस लिफाफे को ध्यान पूर्वक पढ़ लेना चाहिए और लोगों से उस आदमी द्वारा कहलवा देना चाहिए कि "हां ठीक वही खत है जो अभी इनने बताया।" और इस लिफाफे को दूसरी तरफ डाल दें। अब दूसरा लिफाफा उठावें और कान के पास ले जाकर पहले पढ़े हुए लिफाफे का मजमून सुना दें और लोगों से पूछ कर जांच के लिए फिर इसे पढ़वाने के बहाने खुद पढ़लें इसी प्रकार [illegible] इस लिफाफे को आगे वाले के पहले यह बता देता है तब यह खोलता है। उन्हें यह नहीं मालूम हो पाता कि जादूगर के हाथ में तो दूसरा लिफाफा है जिसके बारे में यह बतला रहा है उसे तो वह पढ़कर दूसरी तरफ डाल चुका अगर अपने आदमी की जो पब्लिक में मिला हुआ है किसी बाहर के आदमी को स्टेज पर खड़ा करला और उसका झूंठ मूंठ विश्वास दिखाने के बहाने लिफाफा खोलने का कार्य कराओ तो खेल में सोने की सुगंध का मजा आता है लोग दांतों तले उंगली दबाते हैं।

—×—

❀ प्यालेमें दो आदमियों के सिर ❀

—:×✓×:—

एक ऐसी सादा मेज लेना चाहिए जिसके पायों की ओर लकड़ी की पट्टी हो। इस पट्टी से ऊपर के तख्ते तक की ऊँचाई के नाप का एक दर्पण मेज के ठीक आधे हिस्से में फिट कर देना चाहिए। खेल दिखाने के स्टेज पर जिस रङ्ग का फर्स हो ठीक उसी रङ्ग का कपड़ा मेज से कुछ आगे इस प्रकार तनना चाहिए जिससे वह स्टेज की बाउन्ड्री ही मालूम पड़े। अब आप समझ गये होंगे कि ऐसा करने से क्या लाभ होगा? इस से दर्पण के ऊपर मेज के आगे वाले दो पाये और सामने वाले कपड़े की ही छाया पड़ सकती है देखने वालों की छाया कपड़े की वजह से न पड़ेगी अब आप देखेंगे तो शीशे का पता भी न चलेगा क्योंकि आगे वाले मेज के दो पायों की छाया से पीछे वाले पायों का भ्रम होता है और आगे वाले कपडों से फर्स का ज्ञान होता है बिना अधिक खोज बीन किये यह मालूम होता है कि मेज पूरे फर्स के ऊपर चारों पायों समेत खुली जगह में खडी है। इस मेज का ऊपर वाला तख्ता कटा हुआ होना चाहिए जिससे शीशे के पीछे बैठे हुए आदमी की गरदन उस में होकर ऊपर आ सके एक स्त्री और दूसरा पुरुष की शकल के लड़के, शीशे के पीछे बिठाये जायँ और कटे स्थान के चारों ओर एक बिना पेंदे का चौड़ा प्याला रख दिया जाय। अब हुक्म कीजिए कि इस

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लड़का तुरन्त ही अपना शिर नीचे से निकाल देगा इसी प्रकार स्त्री का शिर आयेगा। लोगों के प्रश्नों के उत्तर देगा और आज्ञा पाते ही गायब हो जावेगा। यह खेल भी बड़े मजे का है।

* * *

अधर उठना।

(४५) इस के कई तरीके हैं। एक तो स्प्रिंगदार तैयार किये हुए डंडे आते हैं। जिन पर जिस्म कसा हुआ फुर्तीला आदमी टंगा रह सकता है। दूसरे पर्दे के पीछे गरियां लगा कर उस में रस्से डालते हैं और उस आदमी को उठाने वाला आदमी अपनी ताकत से छाती तक उठा कर उसकी पीठ में लगे हुए कुंदे से रस्से के सिरों में लटकने वाले आंकड़े फंसा देता है और इस क्रिया पर कपड़े का पर्दा डाल देते हैं। तीसरा तरीका यह है कि जादूगर अपने शरीर में बंधे हुए कुंदों में फंसा कर हाथ अलग कर लेता है और छाती के बराबर झूलता दिखाई देता है। चौथी तरकीब यह है कि झूलने वाले आदमी के पैरों में लकडी के बने हुए पैरों को पकड़ा लेते हैं जादूगर इस आदमी के ऊपर कपड़ा डाल देता है और शिर तथा लकडी के पैरों को पकड कर उठाता है सीखा हुआ आदमी लकडी के पैरोंको तो छोड देता है और शिर की सीध को ठीक रख कर धीरे २ ऊपर उठता है। इधर जादूगर उन लकडी के पैरों पर एक हाथ और दूसरा शिर पर रख कर ऊपर उठाता है यहां तक कि आदमी खड़ा हो जाता है और उसी सीध में उसके पैर रहते हैं। स्मरण रहे कि उठाने वाले का मुंह सामने करने पर भेद खुल जाता है। कपड़े से ढका होने के कारण लोग रहस्य नहीं समझ पाते हैं और अचम्भा करते हैं।

* * *

सादे कागज पर प्रश्नों का उत्तर आना।

(४६) जब कोई आदमी प्रश्न करे तब अपने एक चतुर साथी को पीछे छिपा कर बिठा देना चाहिए वह आदमी उस प्रश्न को सुनले और उसका गोल शब्दों में उत्तर सोच ले जो ऐसे शब्दों में हो कि पीछे गलत निकले तो झूठा न बनना पड़े ऐसे उत्तर को एक तोले पानी में बीस बूंद तिजाब मिला कर बनाये हुए अर्क से लिख दें और छाया में सुखा लें यह कागज बिलकुल सादा रहेगा और इस पर कुछ भी लिखा हुआ न मालूम पड़ेगा। इस सादा कागज को प्रश्न कर्त्ता को दे दीजए और कहिए कि इस कागज को धूप दीप दिखाना उत्तर आ जावेगा जैसे ही इस कागज को गरम किया जायगा काले २ अक्षर निकलने लगेंगे। प्रश्न कर्त्ता सच्चा जादू समझेगा।

नहाने के साबुन की पेन्सिल सी बन कर उसमे सादे कागज पर कुछ लिखिए कुछ भी दिखाई न पड़ेगा पर अगर उस कागज को पानी में डुबाया जाय तो सारे अक्षर दीखने लगेंगे।

* * *

काला जादू।

(४७) एक काले कपड़े की कोठरी बनाई जाती है जिसमें नीचे ऊपर पीछे तथा दोनों बाजुओं पर काले कपड़े की दीवारें बनी होती हैं। सामने का हिस्सा खुला रहता है। जादूगर इस कोठरी में खेल करता है। वह मनोरंजक बातें करता जाता है और अपनी जरूरत के लिए अनेक प्रकार की चीजें मंगाता है। जैसे कुर्सी, गरम चाय से भरा हुआ प्याला, छडी, पुस्तक, बाजा, दियासलाई आदि इस तरह की सैकडों चीजें वह मांगता है। उसकी मांगी हुई चीजें बीच ही बीच पोले आकाश में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हवा में भूलती रहती हैं। उन चीजों से प्रयोजन पूरा करने के बाद उन्हें फिर फेंक देता है वे हवा में भूलती रहती हैं और जब आज्ञा देता है गायब होजाती है।

चूंकि यह चीजें ऊपर नीचे नहीं आती जाती, बीच ही बीच प्रकट और गायब हो जाती है, इससे यह शुबा नहीं होता कि यह पुतली की तरह कोई तार लगा कर वस्तुऐ ऊपर से नीचे लाई ले जाती है दूसरे जादूगर खुद भी हवा में अधर लटक जाता है और कभी बीचों स्टेज पर बिना किसी आड के सब के सामने गायब हो जाता है। देखने वालों को उस समय जादूगर बिलकुल एक प्रकार का अलौकिक भूत प्रेत जैसा करतब दिखाई पडता है दर्शक आश्चर्य में दङ्ग रह जाते हैं।

इस खेल में देखने वालों की आंखों को धोखा दिया जाता है। स्टेज काली मखमल का बनाया जाता है खेल रात में दिखाते हैं। दोनों ओर गैस की रोशनी लगा देते है। एक लडका काली मखमल का खेल सिर से पैर तक ओढ कर स्टेज में फिरता रहता है काली मखमलकी तेज कालिमा इतनी गहरी होती है कि काले खोल से ढका हुआ लडका उसमें चलता फिरता नजर नहीं आता। वह लडका पर्दे के पीछे रखी हुई चीजों को लाकर देता रहता है, अधर पकड़े रहता है और वस्तुओं को अपनी बगल में छिपा ले जाता है इस प्रकार यह खेल बड़ा ही अद्भुत दृष्टिगाचर होता है।

मैस्मरेजम

(४८) जादूगर किसी आदमी को मंत्र बल दिखा कर बेहोश करता है। उसकी आंखों से पट्टी बांधता है और ऊपर कपड़े से ढक देता है जिससे किसी को यह शुबा न हो कि बेहोश हुए आदमी को कुछ दीखता है।

अब जादूगर दर्शकों के पास जाता है और उसकी किसी अंग पर या वस्तु पर हाथ रख कर या उसकी ओर इशारा करके पूछता है कि यह क्या वस्तु है? वह बेहोश बन कर पड़ा हुआ आदमी अपने स्थान पर पड़ापड़ा बताता रहता है कि वह क्या वस्तु है। उत्तर ठीक निकलते हैं।

वास्तविक साधनात्मक मैस्मरेजम तो अभ्यास के ऊपर निर्भर है। पर यह नकली मैस्मरेजम दूसरे तरीके से की जाती है। तमाशे वाला अपना एक साथी नियुक्त करता है। और दोनों मिल कर एक प्रश्नोत्तरी याद करते हैं। प्रश्नों की भाषा में जरा जरा से हेर फेर करने से उसका उत्तर बदल जाता है। जैसे—यह क्या है, यह क्या वस्तु है, यह क्या चीज है? बताओ यह क्या चीज है? देखो यह क्या वस्तु है? इस प्रकार प्रश्नों की भाषा में थोड़ा अन्तर करने से दर्शक तो उसका भेद समझ नहीं पाते पर वह बेहोश बन कर पड़ा हुआ आदमी सब कुछ समझता है॥ और प्रश्न की भाषा ध्यान में रख कर पूर्व निर्धारित उत्तर देता रहता है।

साधक सिद्ध का जोड़ा

(४९) साधक सिद्ध की जोडी बना कर खेल न होने पर भी अनेक खेल दिखाये जा सकते हैं। दर्शकों बीच में एक या कई आदमी अपने सिखाये पढाये हुए बिठा दिये जाते हैं। कोई सज्जन मेरे पास आवें जादूगर की यह बात सुन कर साधारण दर्शक तो झिझक के कारण पहले उठते नहीं पर वह सिखाये पढाये आदमी तुरन्त उठ कर उसके पास पहुँच जाते हैं।

सिखाये हुए आदमी की सहायता से अनेकों खेल हो सकते हैं। जैसे उस आदमी को एक रुपया दिया कि इसे मुट्ठी में पकडलो। पर वास्तव में उसे दिया नहीं। उससे पूछा तुम्हारी मुट्ठी में रुपया है वह कहता है। फिर मुट्ठी खुलवाई तो वह न निकला। दर्शकों ने समझा बन्द मुट्ठी में से रुपया उड गया। किसी वस्तु को कुछ का कुछ बनाना। जैसे पुस्तक दिखाई तो वह बता रहा है कि यह स्लेट है दर्शक समझ रहे हैं कि जादू के कारण इस आदमी को कुछ का कुछ दीख रहा है।

कई व्यक्ति जब इस प्रकार में सीखे होते हैं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तो वे जादूगर की मनमर्जी झूठ बोल कर लोगों को हैरत में डालते हैं। दर्शक समझते हैं कि यह लोग ठीक ही कहते होंगे उस विश्वास के कारण ही वे उल्लू बनते हैं। घड़ियों का एक दम बहुत आगे पीछे होजाना भी इसी प्रकार मिन्नी भगत से होता है।

—:×:—

—: बक्सों के खेल :—

—:-❀-:—

बक्सों की सहायता से बड़े बड़े खेल किये जाते हैं। एक बक्स खाली दिखा कर उसमें कोई बहुत बड़ी चीज निकालते तथा उस बक्स में बहुत बड़ी इतनी बड़ी जिससे बक्स करीब-करीब भर सा जाता है ढक्कन लगा कर रख देते हैं और फिर जब उसे खोलते हैं तो वह रखी हुई चीज गायब हो जाती है। दर्शकों को इसमें विशेष रूप से आश्चर्य इस लिए होता है कि उसमें संदेह करने की गुंजायश बहुत ही कम होती है।

बक्स बीच स्टेज पर रखा होता है जिससे यह आशंका नहीं होती कि पीछे पर्दे की आड़ में बक्स की वस्तु किसी प्रकार छिपाई गई होगी। बक्स जिस जगह रखा होता है उसके नीचे कोई तहखाना या पोल तो नहीं है जिसमें चीज छिपाई जाती हो इसका भी खूब ठोक पीट कर विश्वास करा दिया जाता है। अक्सर उस बक्स को किसी बड़ी मेज पर भी रख देते हैं जिससे बक्स की वस्तु के छिपाये जाने का संदेह दर्शकों के मन में उत्पन्न न होने पावे।

इस प्रकार रख कर उस लकड़ी के बक्स को सब ओर से ठोक बजा कर दिखाते हैं कि कहीं से टूटा फूटा तो नहीं है। साथ ही उसके भीतर की गहराई और बाहर की ऊंचाई नाप कर दिखाते हैं कि जिससे यह आशंका न रहे कि इसमें भीतर कोई पर्त होगा। जिससे चीज छिप जाती होगी। साधारणतः सब परीक्षाओं के बाद

का बक्स मात्र है और उसके आगे पीछे कोई लाग लपेट नहीं है। यह सब होते हुए भी इस बक्स में से बहुत बड़ी आकार की वस्तुएं गायब होना और उनका तथा उनके स्थान पर दूसरी चीजों का आ जाना एक आश्चर्य का विषय है।

इस बक्स को खाली दिखाया जाता है फिर उसमें एक मनुष्य प्रकट होता है। इसके बाद वह आदमी उसी बक्स में गायब हो जाता है फूल मेवा, मिठाई, रुमाल, कबूतर, खरगोश, जैसी अनेकों चीजें निकलती और गायब होती है। जादूगर अपने मनोरंजन और मधुर वार्तालाप द्वारा खेल को और भी आकर्षक बना देता है सब दर्शकों का मन मोह लेता है। इस एक ही बक्स के सहारे सैकड़ों किस्म के खेल दिखाए जा सकते हैं। अलादीन का चिराग की तरह यह जादू का बक्स मनमानी चीजें प्रकट और गायब करता है देखने वालों का बड़ा मनोरंजन होता है।

इस बक्स का बनाने में एक रहस्य होता है। जिस तरफ सांकल कुंदा होता है उस तरफ की दीवार के सहारे भीतर की ओर एक टीन की दीवार लगाई जाती है। इसे इसी रंग से रंग देते हैं जिस रंग से बक्स रंगा होता है। यह टीन की दीवार नीचे के पेंदे के साथ जुड़ी होती है। नीचे का पेंदा खुलने और बन्द होने वाला होता है। उसमें एक छोटी कील इस तरह लगाई जाती है जिसको जरा हटाने से पेंदा खुलता और बन्द होता है। बक्स चौकोर होता है। उसे जब दर्शकों को दिखाना होता है तो ऊपर वाला ढक्कन जिधर होता है उसे दर्शकों की तरफ लौटा देते हैं। साथ ही पेंदे की चटखनी वाली कील हटा कर पेंदे को पीछे पलट देते हैं। पेंदे के साथ-साथ वह वस्तु जो बक्स में रखी हुई थी बक्स की आड़ में पीछे की ओर चली जाती है। फलस्वरूप दर्शकों को दिखाई नहीं पड़ती। लकड़ी का असली पेंदा पीछे चला जाता है पर उसके स्थान पर नकली टीन का पेंदा आ जाता है। रंग उसका

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यह मालूम नहीं हो पाता कि बक्स में कुछ हेर फेर हो गया है। जब इस बक्स को फिर सीधा करते है तो असली पेंदा अपनी जगह पर और नकली अपनी जगह पर आ जाता है, जिससे जो वस्तु गायब हुई थी पर फिर सरक कर आ जाती है।

जादूगर बक्स के पीछे रहता है। वह उसे ढकने के बहाने वा वैसे ही उस पर हाथ फिराने के बहाने पेंदा हटने के कारण पीछे गई हुई चीज को हटा कर उसके स्थान पर दूसरी चीज रख देता है जिसमे एक वस्तु गायब होकर दूसरी प्रकट होने का खेल होता है। इस तमाशे में दर्शकों को सामने बिठाया जाता है। पीछे क्या होरहा है इसे लोग देखने न पावें इसकी खास व्यवस्था रखी जाती है।

—:× × ×:—

बोतल में सिगरेट नचाना—कांच की सफेद बोतल के नीचे के हिस्से को एक इंच किसी रंग से रंगवा लीजिए जिससे उसकी पेंदी में पडी हुई चीज दिखाई न दे। एक सिगरेट के बीच में आल-पिन लगाकर उसमें एक रेशमी डोरा या बाल बांध कर बोतल से बाहर रखिए और सिगरेट को बोतल में डालिए अब एक सिगरेट जला दीजिए और कहिए कि इस जली सिगरेट को आपके सामने नाचती कूदती पेश करता हूँ यह कह बोतल से बाहर पड़े हुए रेशमी डोरे को अपनी उंगली में सफाई से उलझा दीजिए। अब जैसे २ आपका हाथ चलेगा वैसे ही वह सिगरेट नाचेगी लोगों को बडी खुशी होगी।

⁂

घड़ी तोड़ना:—टीन या लकडी का एक खरल इस प्रकार का बनवाइए जिस के दो पर्त हों और किनारे पर आकर दोनों ऐसी टक्कर खाते हों कि दोनों एक ही मालूम पड़ें। ऊपर वाला हिस्सा कुछ निकला हुआ रहे। नीचे वाले खरल की पेंदी में एक घडी छिपाये रखने लायक गड्ढा होना चाहिए। इस खरल को ढकने के लिए चमड़े का एक खोल खरल की ही शकल में नीचे को मुड़ा हुआ होना चाहिए अर्थात् उसे खरल पर रखदें तो वह पूरा ढक जाय। तमाशा दिखाते समय ऊपर वाले पर्त को चमड़े के खोल में छिपा कर रख दीजिए और किसी की साबित घडी मंगा कर, उस में रख कर चमड़े के खोल से खरल को ढंक दीजिए इस ढक्कन में ऊपर के पर्त को लाकर खरल में फिट कर दीजिए। ऊपर के पर्त में एक दूसरी घडी के पुर्जे पहले से ही रखने चाहिए। इन्हें लकडी के दस्ते से ही धीरे धीरे कुचल दीजिए जब आप टूटे हुए पुर्जे लोगों के सामने पेश करेंगे तो घडी वाला बहुत नाराज होगा और कहेगा मेरी घडी लाओ, अब आप खरल के साथ ऊपर वाले पर्त को फिर उठा कर ले जाइए और अलग रख दीजिए नीचे के भाग में साबित घडी रखी है उसे आप ज्यों की त्यों दे दें तो लोग आपको सिद्ध समझेंगे।

—:× × ×:—

"अखण्ड ज्योति" प्रेस फंण्ड के लिए इस मास की सात्विक सहायताऐं

२॥) श्री बहादुरसिंहजी छतरपुर
२॥) श्री राम भगतजी गौड़ बिंझवार
२) श्री जगतमणि मेहता लोअर चुटिया
२) श्री भीलचंद नंदरामवर्मा वकील धरमपुरी
२) श्री पंढरीनाथ चम्पालाल वकील, खरगोन
२) श्री रामदत्तशर्मा हैडमास्टर खिवन्दी
१॥) श्री मकरन्दलाल टेलर मास्टर, हरदोई
१॥) पं० रामदयाल शर्मा तिलहर
१।) श्रीमती निरादेवी शर्मा पूना
१।) श्री अवधराम शर्मा; बहराइच
१—) श्री नरायणप्रसाद दमोह
१) प सत्यनरायण शर्मा, कुचलाना
१) श्री गणपति गोपालगुप्ता, खरगोन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

इन पृष्टों का प्रयोजन

पिछले पृष्ठों पर कुछ थोड़े से जादू के खेलों का परिचय कराया गया है। हमने यह बताने की चेष्टा की है कि इन खेलों के पीछे क्या रहस्य छिपा होता है। चूंकि यह विषय पाठकों के लिए बिल्कुल नया है, इस विषय में उनकी पूरी जानकारी प्रायः नहीं के बराबर होगी, ऐसी दशा में पिछले पृष्टों पर लिखे गये रहस्य उनकी समझ में भली प्रकार आजावेंगे, इसकी हमें आशा नहीं है। जो विद्यार्थी ज्योमेट्री नहीं जानता उसके लिए कितने ही अच्छे ढंग से लिखी हुई ज्योमेट्री की पुस्तक अपने आप पढ़कर समझ में आजाय यह कठिन है। विज्ञान के अनेक विषय भी इसी प्रकार के हैं। उन पर बड़े अच्छे ढंग से लिखी हुई पुस्तकें मौजूद हैं, पर साधारण पाठक उन पुस्तकों को पढ कर कुछ विशेष लाभ नहीं उठा सकते। इस प्रकार की शिक्षा अध्यापक के समक्ष उपस्थित होकर प्रश्नोत्तर के साथ विद्यार्थी प्राप्त करता है। अध्यापक उसे प्रत्यक्ष, प्रमाण, उदाहरण के आधार पर समझती है तब वह पुस्तकों में लिखी हुई शिक्षा विद्यार्थी की समझ में आती है। यही बात जादूगरी के रहस्यों के सबंध में है। हमने शक्ति भर यह प्रयत्न किया है कि खेलों का रहस्य सरल और सुवोध ढंग से लिख कर पाठकों को उनके भेदों को भली प्रकार समझादें पर हमें यह आशा नहीं है कि पिछले पृष्टों को पढ कर पाठक भली प्रकार उन बातों को समझ गये होंगे। पृष्ट अधिक न बढने पावें इस बात को ध्यान में रख कर संक्षिप्त ढंग से लिखने का भी ध्यान रखा गया है, ऐसी दशा में कठिनाई और भी बढी है। यदि हर छोटे खेल को समझाने में तीन चार पृष्ट लिखे गये होते तो संभव था कि पाठकों को समझाने से अधिक सुविधा होती पर ऐसी दशामें इतने पृष्टोंपर आठदस खेल में अधिक न लिखे जा सकते।

इन पंक्तियों को लिखने का हमारा उद्देश्य किसी को जादूगर बनाने का नहीं है, और न हम यह चाहते हैं कि इन पृष्टों को पढ कर कोई व्यक्ति जादू के खेल दिखाने लगे। क्योंकि इस कला झूठ, छल, फरेब और धोखा प्रधान है। कोई खेल ऐसा नहीं है जिसमें यह चारों बातें न हो। मनोरंजन के लिए ही सही पर इन दुर्वृत्तियों का पोषण किसी भी दशा में उचित नहीं। मन में इनको स्थान मिलने से वे जीवन की अन्य दिशाओं में भी धर दौडती हैं और कलुषित तत्वों को एकत्रित कर देती हैं। यही कारण है कि इस प्रकार के कारोबार करने वालों का खेल हमशे दिखाने वालों का आत्मिक जीवन उच्चता की ओर अग्रसर नहीं हो पाता। इन बातों पर विचार करते हुए हम नहीं चाहते कि हमारा एक भी पाठक जादूगर बने। जादू के खेल दिखाकर किसी को भ्रम में डाले या इस प्रकार जीविका उपार्जित करे। इस लिए खेल दिखाने के लिए जितनी विस्तृत जानकारी की आवश्यकता है वह हमने अनावश्यक समझ कर लेखबद्ध नहीं की है। पोल खोलने के लिए संक्षिप्त रूप सेलिख देने पर भी काम चल सकता है। पाठक जादूगरी के फरेब को समझ जांय यही हमरा उद्देश्य था और उद्देश्य की पूर्ति संक्षिप्त भाषा में वर्णन कर देने से भी हो सकती है यह समझ कर हमने लेखोंके रहस्य को संक्षेपमें ही लिखा है।

इन पृष्टों को पढकर पाठक यह बात भली प्रकार समझ जावेगा कि जादूगरी का योग या आध्यात्मा से कोई संबंध नहीं है। सेवड़े की विद्या मसान सिद्धि, जोगिनी की चौकी, मंत्र का [illegible] आदि भ्रान्त धारणाऐं जो जादूगरों के सबंध फैली हुई है, उनका अब नव जागरण की वेला अन्त होना ही चाहिए। जादूगरों के पास कोई विशेष शक्ति बह. मान्यता बिलकुल भ्रम पूर्ण है। वे, उन्हें कोई भूत पिशाच, देवी देवता, सिद्ध नहीं होता इसलिए पाठकों से हमारा अनुरोध है कि जादू के आकर्षण को मनमें से बिलकुल निकालदें। जीवका सच्ची सिद्धि सच्चे योग में है। आत्म शुद्धि करके परमात्मा की समीपता के लिए हमें सच्चे हृदय से कदम बढाना चाहिए। इस मार्ग में एक से एक आश्चर्य जनक सिद्धियां अपने आप मिलती हैं। यही कल्याण का मार्ग है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

संसार के कष्टों से पार होने के उपाय

(महाभारत शान्ति पर्व अध्याय ११० से)

* * *

विनश्यमानेषु भूतेषु तैस्तैर्भावैस्ततस्ततः ।
दुर्गाणितित दूयेन तन्मे ब्रुहि पितामह ॥

युधिष्ठिरजी ने भीष्मजी से पूछा कि हे पितामह । कष्टों में पड़ा हुआ मनुष्य किस प्रकार विपत्तियों से छुटकारा पा सकता है, उन उपायों को आप मुझे से कहिए

ये दंभान्नाचरन्तिस्म येषा वृत्तिश्च संयता ।
विषयांश्च निगृहणान्ति दुर्गाण्यति तरन्तिते ॥

भीष्मजी ने उत्तर दिया:—हे युधिष्ठर ! जो ढोंग नहीं करते, जिनकी वृत्ति संयमित है जो विषयों पर काबू रखते हैं वे दुखों से छूट जाते हैं ।

प्रत्याहुनोच्य मानाये न हिंसन्ति च हिंसताः ।
प्रयच्छन्ति न याचन्ते दुर्गाण्यति तरन्ति ते ॥

किसी के निन्दा करने पर भी उसकी निन्दा नहीं करते, स्वयं पीडित होने पर भी दूसरों को पीडा नहीं देते, कुछ न कुछ औरों को देते हैं परन्तु स्वयं याचना नहीं करते, ऐसे लोग दुखों से छूट जाते हैं

स्वेषु दारेषु वर्तन्ते न्याय वृत्तिमृतावृतौ ।
अग्नि होत्रपराः सन्तो दुर्गाण्यति तरन्ति ते ॥

जो अपनी पत्नी से सन्तुष्ट हैं, न्याय से कमाया हुआ अमृत रूपी अन्न सेवन करते हैं, अग्नि होत्र परायण हैं (त्याग वृत्ति के हैं) वे कष्टों से तर जाते हैं ।

आहवेषु च मे शूरास्त्यक्त्वा मरणजं भयम् ।
धर्मेण जयमिच्छन्ति दुर्गाण्यति तरन्ति ते ॥

जो मृत्यु के भय को त्याग कर वीरों की भांति पाना चाहते हैं वे कठिनाइयों से पार हो जाते हैं ।

ये तपश्च तपस्यन्ति कौमार ब्रह्मचारिणः ।
वेद विद्याव्रत स्नाता दुर्गाण्यति तरन्तिते ॥

जो अपने को तपस्वी कष्ट सहिष्णु बनाते हैं, कुमार अवस्था से ब्रह्मचारी रहते हैं. नियम पूर्वक सत् विद्याओं की प्राप्ति में प्रयत्न शील रहते हैं वे कष्टों से छुटकारा पा जाते हैं ।

ये च संशान्त रजसः संशान्त तमसश्च ये ।
सत्वेस्थितामहात्मानो दुर्गाण्यति तरन्ति ते ॥

जिनका रजोगुण (मद. तृष्णा, गर्व, आदि) तथा तमोगुण (काम. क्रोध लोभ, मोह) शान्त पड़ गया है, जो सत्वगुण (शम, दम, तितिक्षा आदि) का सेवन करते हैं वे सत्पुरुष दुखों से पार हो जाते हैं ।

यात्रार्थं भोजन येषां, संतानार्थं च मैथुनम् ।
वाक् सत्य वचनार्थाय दुर्गाण्यति तरन्तिते ॥

जीवन निर्वाह के लिए जिनको भोजन है, जिह्वा के स्वाद के लिए नहीं । संतान के निमित्त मैथुन करते हैं, विषय वासना के लिए नहीं सत् वचनों के लिए बोलते हैं बकवाद के लिए नहीं ऐसे पुरुष दुखों से तर जाते हैं ।

मधु मांसं च य नित्य वर्जयन् तीह मानवाः ।
जन्म प्रभृति मद्यञ्च दुर्गाण्यति तरन्ति ते ॥

जो जीवन भर मद्य, मांस और नशीली चीजों का सर्व प्रकार परित्याग करते हैं वे कष्टोंसे पार हो जाते हैं ।

ये न मानित्वमिच्छन्ति मानयन्ति च ये परान् ।
मन्यमानान्नस्यमयन्ति दुर्गाण्यति तरन्ति ते ॥

जो स्वयं मान की इच्छा नहीं करते परन्तु दूसरों को मान देते हैं । और सम्माननीय सज्जनों के लिए नमते हैं वे कठिनाइयों को पार कर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अपने प्रभु की खोज।

(श्री० महावीरप्रसाद विद्यार्थी, 'साहित्य-रत्न')

जिसे खोजता बन-बन में, तू खोज उसे अपने मन में।

मन की शीतल सुरभित कुञ्जों में मन मोहन रमता है।
जहां प्रेम की कालिन्दी का अमृत कल-कल करता है,
लीलामय वह उसी मधुर मधुबन में, करता है क्रीड़ा,
राग रसीला मुरली का वह रोम-रोम में भरता है॥

देख हृदय की आंखों से, प्रतिबिम्ब उसी का जीवन में।
जिसे खोजता बन-बन में, तू खोज उसे अपने मन में॥

कहां-कहां सुख की मृग तृष्णा मानव को भटकाती है।
यही, यही तो मानव को दानव-सा क्रूर बनाती है,
कौर छीन भूखों के मुँह से यह घर भरती है अपना,
पृथ्वी को कर पाप-पङ्क मय मन्द-मन्द मुसकाती है॥

फूल, शूल दोनों हैं चुन ले चाहे जो इस उपवन में।
जिसे खोजता बन-बन में तू खोज उसे अपने मन में॥

सागर की मँझदार और तू नौका अपनी खेता है।
देख, क्षितिज-तल में विनाश तेरा अंगड़ाई लेता है,
दलन दूसरों का करके चाहता पहनना जय-माला,
तुझे 'अहम्' के आगे मानव! कुछ न दिखाई देता है॥
ढहकर तेरे महल तुझे ही कर देंगे विनष्ट क्षण में।
जिसे खोजता वन-वन में तू खोज उसे अपने मन में॥

नव जीवन सञ्चार करे मरु में तेरी जीवन धारा।
'युक्ताहार विहार' बने तेरा पथ-दर्शक ध्रुवतारा
इन्द्रिय भोगों की अतृप्त है तृष्णा अन्ध न हो मानव!
सुखमय वासस्थान बने तेरा यह पृथ्वीतल प्यारा॥

उतर स्वर्ग आएगा भू पर, रस छलकेगा कण-कण में।
जिसे खोजता बन-बन में तू खोज उसे अपने मन में॥

प्रकाशक—पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, अखण्ड ज्योति कार्यालय, मथुरा।
मुद्रक—रमनलाल बंसल, पुष्पराज प्रिंटिङ्ग वर्क्स, मथुरा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.